॥ जय दादी की ॥

श्री दादी पंचांग

पूना

Ψ

संवत् २०७४, सन २०१७ - २०१८
शाके १९३९, संवत्सरनाम - साधारण

श्री नारायणी धाम
पूना

॥ ॐ श्री राणी सत्यै नमः ॥

श्री दादी पंचांग

गणितकर्ता व संपादकः-

पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)
विलेपार्ले, मुम्बई,
फो. ०२२-२६१६६७८३

E-mail: Sharmagyarsilal@gmail.com

प्रकाशक :-

श्री नारायणीदेवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट

श्री नारायणी धाम, श्री नारायणी नगर,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, कात्रज सातारा रोड़, पुणे ४११ ०४६
फोन ०२०-२४३६५१५१, मो. ०९४२२००२९४२
www.narayanidham.org

तृतीय संस्करण
पूणे मुल्य सप्रेम भेंट
माघ शुक्ला दशमी (१०) सोमवार, ६ फरवरी २०१७

श्री नारायणीदेवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट

Shree Narayanidevi Sanskrutik Bhavan Trust

श्री नारायणी धाम सर्पोद्दान के सामने, कात्रज दुग्ध डेअरी के पीछे, सातारा रोड़, पूना- ४११०४६

जय दादी की

सभी दादी भक्तों को पंचदश वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं ।

सन २०१७ - २०१८ के वार्षिक कार्यक्रम की सूची तथा पंचांग प्रस्तुत कर रहे हैं । गत चोदह वर्षों में श्री नारायणीधाम में आयोजित कार्यक्रमों में तथा मन्दिर के अन्य सामाजिक कार्यों में आपका योगदान, हमारे उत्साह को दिन प्रतिदिन बढा रहा है ।

उपलब्ध सेवायें तथा सुविधायें -

१) **अखंड दीपक**- श्री दादीजी का, श्री खाटु श्यामजी का, श्री सालासर बाबा का
२) ध्वजा सेवा ।
३) इत्र (अतर) सेवा ।
४) श्रृंगार, फूल श्रृंगार ।
५) नवमी प्रसाद, छप्पनभोग, धनुर्मास प्रसाद, राजभोग प्रसाद ।
६) **अभिषेक** - श्री गणेशजी का, श्री दादीजी का, श्री कृष्ण भगवान का श्री शिवजी का तथा श्री हनुमानजी का ।
७) रोली, मोली, मेहंदी, चावल, गुलाबजल, गंगाजल, फूलबत्ती इ. ।
८) **भवन** - शुभ कार्यों के लिए, मेहमानों के लिए, यात्रियों के लिए, तथा छात्रों के लिए उपलब्ध है । भवन के सारे कमरे अभी वातानुकूलित **(A.C.)** हो गये हैं ।
९) न्यास की ओर से समय समय पर आपत्कालीन संकटो पर पीड़ितों को सहायता दिलवाना ।
१०) मन्दिर के प्रांगण में प्याऊ की व्यवस्था उपलब्ध है ।
११) मन्दिर के बेसमेंट में **A. C.** हाल विविध कार्य क्रमों के लिए उपलब्ध है ।

आपसे अनुरोध है कि आप निम्न लिखित जानकारी प्रदान करके हमें आपको श्री नारायणीधाम तथा सामाजिक धार्मिक गतिविधियों की जानकारी आप तक पहुँचाने का अवसर प्रदान करें ।

१) आपका पता :	४) आपकी जन्म तारीख :
२) फोन नं. तथा मोबाईल :	५) आपकी शादी की सालगिराह :
३) आपका ईमेल :	६) मेम्बरशीप हेतु संपर्क :

आपके संपर्क में यदि कोई दादी भक्त है तो उनको तथा हमें उनका पता सूचित करें । आप यदि बाहर गांव में हो और पुना के बारे में जानकारी या कोई मन्दिर के बारे में / सेवाओं के बारे में जानकारी चाहिये तो कृपया संपर्क करें ।

बेपसाईट : **www.narayanidham.org**

धन्यवाद !

भवदीय

सुनिल फुलचंद पोद्दार
मानद सचिव
Email : sfpoddar@gmail.com

Ψ ॥ जय दादी की ॥ Ψ

श्री नारायणीधाम पुणे में २०१७-२०१८ वर्ष में निम्नलिखित उत्सवों का आयोजन किया जायेगा । संवत् २०७४

माह/पक्ष	तिथि	तारीख	वार	उत्सव
चैत्र शुक्ल	तृतीया तीज	३०/ ३/१७	गुरुवार	गणगोर पूजन व गणगोरपूजन व्यवस्था सुबह ७.०० बजे से
चैत्र शुक्ल	अष्टमी	४/ ४/१७	मंगलवार	जन्मोत्सव दोपहर १२ बजे श्रीराम नवमी
चैत्र शुक्ल	चतुर्दशी	१०/ ४/१७	सोमवार	श्री रामायण अखंड पाठ सुबह १०.३० बजे से
चैत्र शुक्ल	पूर्णिमा हनुमान जयंती	११/ ४/१७	मंगलवार	समाप्ती सुबह ६.३०, हनुमान जयंती आरती महाप्रसाद,भंडारा सुबह १० से दोप.२
वैशाख कृष्ण	नवमी	२०/ ४/१७	गुरुवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
वैशाख शुक्ल	अक्षय तृतीया	२९/ ४/१७	शनिवार	श्री दादीजी के चरण दर्शन
ज्येष्ठ कृष्ण	नवमी	२०/ ५/१७	शनिवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
आषाढ़ कृष्ण	नवमी	१८/ ६/१७	रविवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
श्रावण कृष्ण	नवमी	१८/ ७/१७	मंगलवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
श्रावण कृष्ण	हरियाली अमावस	२३/ ७/१७	रविवार	झूला दादीजी का, सिंजारा छप्पन भोग, झूला महोत्सव प्रारंभ भजन सायँ ४ से ७ बजे
श्रावण शुक्ल	पूर्णिमा	७/ ८/१७	सोमवार	खण्डग्रास चन्द्रग्रहण
श्रावण शुक्ल	पूर्णिमा	७/ ८/१७	सोमवार	झूला महोत्सव समाप्ती, रक्षाबंधन
भाद्रपद कृष्ण	सप्तमी/जन्मा.	१४/ ८/१७	सोमवार	श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रात्री १० से १२ बजे
भाद्रपद कृष्ण	नवमी	१६/ ८/१७	बुधवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
भाद्रपद कृष्ण	भादवा चौदस	२०/ ८/१७	रविवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ दोपहर १ बजे से ७ बजे
भाद्रपद कृष्ण	भादी अमावस	२१/ ८/१७	सोमवार	सुबह ७ से रात्री १० बजे धोक पूजन (छप्पनभोग प्रसाद)आरती दोपहर १२.३०
भाद्रपद शुक्ल	गणेशचतुर्थी	२५/ ८/१७	शुक्रवार	गणेशजी का महा-अभिषेक
भाद्रपद शुक्ल	राधा-अष्टमी	२९/ ८/१७	मंगलवार	श्री राधाष्टमी, राधाकृष्ण अभिषेक

Ψ ॥ जय दादी की ॥ Ψ

माह/पक्ष	तिथि	तारीख	वार	उत्सव
आश्विन कृष्ण	नवमी	१४/ ९/१७	गुरुवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
आश्विन शुक्ल	प्रतिपदा	२१/ ९/१७	गुरुवार	नवरात्र महोत्सव, घटस्थापना सुबह
आश्विन शुक्ल	अष्टमी	२८/ ९/१७	गुरुवार	कन्या पूजन सुबह ९.३० बजे
आश्विन शुक्ल	शरद पूर्णिमा	५/१०/१७	गुरुवार	भजन रात्री ८ से ९.३०,सुंदरकाण्ड पाठ
कार्तिक कृष्ण	नवमी	१३/१०/१७	शुक्रवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
कार्तिक कृष्ण	अमावस	१९/१०/१७	गुरुवार	श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली)
कार्तिक शुक्ल	आंवला नवमी	२९/१०/१७	रविवार	श्री नारायणी जन्मोत्सव/दीपोत्सव अन्नकूट/मंगलपाठ सायँ ४ से ९ बजे
मार्गशीर्ष कृष्ण	नवमी	१२/११/१७	रविवार	श्री दादीजी का जन्मोत्सव सायँ ४ से ७ बजे
मार्गशीर्ष शुक्ल	नवमी	२८/११/१७	मंगलवार	श्री दादीजी के शादी की वर्षगाठ मंगलपाठ सायँ ४ से ७ बजे
पोष कृष्ण	नवमी	११/१२/१७	सोमवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
पोष कृष्ण	त्रयोदशी	१५/१२/१७	शुक्रवार	मलमास प्रारम्भ.भजन सुबह ८ से ९, प्रसाद
माघ कृष्ण	नवमी	१०/ १/१८	बुधवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
माघ कृष्ण	त्रयोदशी	१४/ १/१८	रविवार	मलमास समाप्ति
माघ कृष्ण	त्रयोदशी	१४/ १/१८	रविवार	मकर सक्रांति पुण्यकाल
माघ शुक्ल	दशमी	२७/ १/१८	शनिवार	वार्षिक महोत्सव
माघ शुक्ल	पूर्णिमा	३१/ १/१८	बुधवार	ग्रस्तोदय स्वग्रास चन्द्रग्रहण
फाल्गुन कृष्ण	नवमी	९/ २/१८	शुक्रवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे
फाल्गुन कृष्ण	त्रयोदशी	१३/ २/१८	मंगलवार	महाशिवरात्री महा-रुद्राभिषेक
फाल्गुन शुक्ल	एकादशी	२६/ २/१८	सोमवार	श्यामबाबा के भजन सायँ ७.३० से ९.३०, प्रसाद
फाल्गुन शुक्ल	चतुर्दशी	१/ ३/१८	गुरुवार	होलीका दहन
चैत्र कृष्ण	प्रतिपदा	२/ ३/१८	शुक्रवार	होली महोत्सव, फूलों की होली
चैत्र कृष्ण	नवमी	११/ ३/१८	रविवार	श्री दादीजी का मंगलपाठ भजन सायँ ४ से ७ बजे

हर पूर्णिमा तथा अमावस को साँय ७.३० बजे सुन्दरकाण्ड तथा दादीजी की अमृतवाणी का पाठ, हर शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन रात्री ७.३० से ९ बजे श्याम बाबा के भजन ।

।। श्री दादी पंचांग देखने की विधि ।।

श्री दादी पंचांग आधुनिक युवा पीढी की सुगमता के लिए निर्माण किया गया है । पाठक गण इसे सुगमता पूर्वक देख एवं समझ सके इस विषय पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

इसका गणित पूना (महाराष्ट्र) के अक्षांश १८।३१, रेखांश ७३।५२ पर आधारित है । इस व्रतोत्सव में समय भारतीय स्टैण्डर्ड घण्टा-मिनट पर आधारित हैं । प्रारम्भ में व्रत - त्यौंहार तालिका दी गई है तांकि मुख्य व्रत - त्योंहारों की जानकारी सरलता से हो सके ।

विवाह मुहूर्त्तों की जानकारी के लिए तारीखों सहित लग्न का स्पष्ट उल्लेख किया है ।

तारा (गुरु-शुक्र) छ शहरों का उदय और अस्त, सूर्यग्रहण-चंद्रग्रहण का विवरण ।

योगों की श्रृंखला में - गुरुपुष्यामृतयोग का समावेश किया गया हैं । इस योग में किया हुआ कार्य शुभ फलदायक होता है ।

चौघड़ियों के नाम और उनकी विस्तृत जानकारी देते हुए दिन के चौघड़ियों और रात्री के चौघड़ियों की रविवार आदि क्रम से सारणी दी गई है । चौघड़िया का स्पष्ट समय स्वयं ज्ञात कर सकें इसके लिए एक उदाहरण भी दिया है । १ अप्रेल, दीपावली के चौघड़ियों का स्टैंडर्ड समय पूना, मुम्बई, कोलकात्ता, दिल्ली, बंगलुरू, झुञ्झुनू के लिए दिया हैं ।

मेषादि १२ राशियों के अक्षरों की जानकारी के लिए सारणी दी है ।

मकर सक्रान्ति का प्रवेश और पुण्यकाल का समय दिया है ।

सूर्य की मेषादि १२ सक्रान्तियों का तारीख सहित प्रवेशकाल का समय दिया है ।

पक्ष के प्रारंभ में अंग्रेजी तारीख हैं फिर तिथि शब्दों और ब्रेकेट में अंको में है । उसके आगे वार और तिथि समाप्ति काल का समय दिया गया है तदुपरांत सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय है । पंक्ति के अंत में भद्रा और व्रतोत्सव आदि हैं ।

पक्ष पूर्ण होने पर -

मूलादि (बार) की सम्पूर्ण जानकारी दी गई है तांकि यह मालुम हो सके कि नवशिशु का जन्म मूलादि (बार) में हुआ है या नहीं ।

चंद्र (जन्म) राशि का विवरण तारीख और स्टैं. घण्टा-मिनट के साथ (राशि का प्रारम्भ समय) दिया गया है जिससे जन्मराशि और किस अक्षर पर जन्म का नाम रखना है यह तुरंत देखा जा सके ।

आशा है पाठकगण **श्री दादी पंचांग, पूना** का लाभ उठाएंगे आपके सुझाव सप्रेम आमंत्रित हैं ।

।। कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ ।।

अयन (सायन/निरयन)- दो प्रकार के होते हैं । पहला सायन और दूसरा निरयन । सायन सूर्य से छ ऋतुओं का निर्धारण होता है और निरयन सूर्य से पंचांग (धार्मिक व्रतोत्सव, मुहूर्त्त आदि) का निर्णय किया जाता है । (पीयूषधारा पृ.२७२, श्लोक ९)

अयन - एक वर्ष में दो अयन होते हैं । उत्तरायण और दक्षिणायन । मकर सक्रान्ति से उत्तरायण प्रारम्भ होता है और सूर्य कर्क राशी पर आवे तब दक्षिणायन प्रारम्भ होता है ।

ऋतु - एक वर्ष में छ ऋतु होती हैं । उनके नाम :- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर ।

माह - हिंदी महिने १२ होते हैं । उनके नाम :- चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन इन्हे चान्द्र मास कहते हैं ।

पक्ष - एक चान्द्र मास में दो पक्ष होते हैं । कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष । राजस्थान में कृष्णपक्ष को बदि एवं लागत और शुक्लपक्ष को सुदि एवं उतरत कहते हैं ।

तिथि - एक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं । कृष्णपक्ष में प्रतिपदा(१) से अमावस्या(३०) तक । शुक्लपक्ष में प्रतिपदा(१) से पूर्णिमा(१५) तक ।

नक्षत्र - नक्षत्र २७ होते हैं उनके नाम :- अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा,पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवति

अभिजित - नक्षत्र को मिलाकर २८ नक्षत्र होते हैं लेकिन अभिजित का स्वतन्त्र स्थान नही है उत्तराषाढा के अन्तिम और श्रवण के प्रारम्भ में स्थित है ।

योग - विषकुंभादि योग २७ होते हैं उनके नाम :- विष्कुंभ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिध्दि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐंध्र, वैधृति ।

करण - करण ११ होते हैं उनके नाम :- बव, बालव, कौलव तैतिल, गर, वणिज, विष्टी, शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किंष्तुघ्न ।

राशि - राशि १२ होती हैं । उनके नाम :- मेष, वृष, मिथुन,कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन ।

भद्रा - प्रत्येकतिथि के सम्पूर्ण भोग्यकाल में दो करणों का भोग्यकाल होता है । इनमें विष्टी नामक करण को ही भद्रा कहते हैं ।

नोट- भद्रा में किसी भी तरह का शुभ कर्म नहीं करना चाहिए ।

॥ मंगल दोष अपवाद ॥

ज्ञात हुआ है कि. वर अथवा कन्या की कुण्डली में मंगलदोष अर्थात् मांगलीक बताकर इतना भ्रम पैदा कर दिया जाता है कि माता पिता तो घबराते ही हैं अपि तु बच्चे (वर कन्या) भी चिंतित हो जाते हैं - मांगलीक प्रमाणित करने के लिए शास्त्र में बहुमत प्राप्त होता है वह कन्या शब्द के लिए है जैसे - **"कन्याभर्त्तु र्विनाशाय.."** इति प्रसिद्धः ॥ शास्त्रों में हमारे ऋषिगणों ने कन्या संज्ञा के लिए कितने वर्ष की आयु निर्धारित की है पढते हैं -

नारद, कश्यप, श्रीपतिनिबन्ध, पराशरादि सहित -

अत एवाह व्यासः - 'अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली स्मृता ॥' इति । - पीयूषधारा

अपि च - दशवर्षा भवेत्कन्या तत् ऊर्ध्वम् रजस्वला ॥' इति । - ग्रन्थान्तर

प्राचीन आचार्यों के मत से १२ वर्ष से ऊपर कन्या संज्ञा नहीं रहती है । ज्ञातव्य है कि १२ वर्ष से ऊपर रजस्वला होने के कारण कन्या संज्ञा नहीं रहती है तो मंगल दोष कहाँ से होगा । अस्तु । मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि - कन्या की आयु १२ वर्ष और वर की आयु १६ वर्ष के बाद किसी भी तरह का कोई मंगलदोष नहीं होता है ।

- पं. ग्यारसीलाल शर्मा (अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग गणितकर्ता)

पंचक -

चन्द्रमा कुंभ और मीन राशि पर जितने समय रहता हो तो उतने समय को पंचक कहते हैं ।

पंचक में किये हुए कार्य की घर-परिवार में पुनरावृत्ति होती है चाहे वो कार्य शुभ हो या अशुभ ।

पंचको में दो कार्य सर्वथा त्याज्य हैं -

(१) काष्ठसंग्रह (लकड़ी इकट्ठी) करना ।

(२) दक्षिण दिशा की यात्रा करना।

पंचक में किसी भी तरह का मांगलिक कार्य शुभफल दायक होता है क्योकि मांगलिक कार्यों की पुनरावृत्ति होती रहेगी ।

राशियों के अक्षर

मेष	चु, चे, चो, ला, लि, लु, ले, लो,अ
वृष	इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो
मिथुन	क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह
कर्क	हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो
सिंह	म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे
कन्या	टो, प, पि, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
तुला	र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते
वृश्चिक	तो, न, नि, नु, ने, नो, या, यि, यु
धनु	ये, यो, भ, भि, भू, धा, फा, ढा, भे
मकर	भो, ज, जी, जु, जे, ख, खु, खो, गि, जो, खि, खे, ग
कुंभ	गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द
मीन	दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि

॥ संवत् २०७५ (सन २०१७-१८) में विवाह मुहूर्त्त ॥

(विवाह मुहूर्त्तों के समय की सामान्य जानकारी प्राप्त करने के लिए)

सन२०१७	**वैशाख कृष्णपक्षः**
१९ अप्रे.	बुधवार दिवा लग्न १, २, ४, ६, रात्री अ. गोधूलि, ९
सन२०१७	**वैशाख शुक्लपक्षः**
२९ अप्रे.	शनिवार दिवा लग्न ४, ६, रात्री १२, १ (भद्रा १७।१५ से २७।३९ यावत्)
३० अप्रे.	रविवार दिवा लग्न १, २
६ मई	शनिवार दिवा लग्न १, २, (भद्रा ८। ६ से २०।३३ यावत्)
८ मई	सोमवार दिवा लग्न ४, रात्री अ. गोधूलि, ९, ११, १२, १ (का.)
९ मई	मंगलवार दिवा लग्न ४ (भद्रा २५।१० से) (का.)
९ मई	मंगलवार दिवा लग्न ४, ६ (भद्रा २५।१० से)
सन२०१७	**ज्येष्ठ कृष्णपक्षः**
११ मई	गुरुवार रात्रौ लग्न गोधूलि, ९, ११, १२, १
१२ मई	शुक्रवार दिवा लग्न २, ४, ६, रात्री गोधूलि
१६ मई	मंगलवार रात्रौ लग्न ११
२२ मई	सोमवार दिवा लग्न २
२२ मई	सोमवार दिवा लग्न ४, ६, रात्री अ. गोधूलि, ९, ११, १, २
२३ मई	मंगलवार दिवा लग्न २
सन२०१७	**ज्येष्ठ शुक्लपक्षः**
२ जून	शुक्रवार दिवा लग्न ७, रात्री अ. गोधूलि १८।१७ यावत् तदुपरांत गोधूलि, ११, १२, २
३ जून	शनिवार दिवा लग्न २, ४, ५
५ जून	सोमवार रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ११, १२, १ (भद्रा ९।४४ यावत्)
५ जून	सोमवार दिवा लग्न ४, ५ (भद्रा ९।४४ यावत्) (का.)
६ जून	मंगलवार दिवा लग्न ४, ५, रात्री अ. गोधूलि
७ जून	बुधवार रात्रौ लग्न ११, १२, १, २
८ जून	गुरुवार दिवा लग्न ४, ५, ७ (भद्रा १६।१९ से २९।३० यावत्)
सन२०१७	**आषाढ़ कृष्णपक्षः**
१८ जून	रविवार रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ११, १, २
१८ जून	रविवार दिवा लग्न ४, ५
१९ जून	सोमवार रात्रौ लग्न १२, २ (भद्रा १४।२३ से २५।१६ यावत्) (का.)
१९ जून	सोमवार दिवा लग्न ४, ५ (भद्रा १४।२३ से २५।१६ यावत्)
२० जून	मंगलवार दिवा लग्न ४, ५, ७ (का.)
सन२०१७	**आषाढ़ शुक्लपक्षः**
३० जून	शुक्रवार दिवा लग्न ३, ४, ५, ७, ८ (भद्रा १८। ० से)
१ जुला	शनिवार रात्रौ लग्न ११, १२, ३ (भद्रा ६।२० यावत्) (का.)

॥ संवत् २०७४ (सन २०१७-१८) में विवाह मुहूर्त्त ॥

२ जुला	रविवार रात्रौ लग्न १२, १, ३
२ जुला	रविवार दिवा लग्न ३, ४, ५, ८, रात्री गोधूलि, १०, ११ (का.)
३ जुला	सोमवार दिवा लग्न ३, ४, ५, ८, रात्री गोधूलि, १०, ११, १२, १
	आगे चतुर्मास प्रारंभ होने से मुहूर्त्त नहीं हैं
सन२०१७	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः**
२३ नवं.	गुरुवार दिवा लग्न ८, ११, रात्री अ. गोधूलि, ४, ६, ७
२४ नवं.	शुक्रवार दिवा लग्न ११, रात्री अ. गोधूलि, ४, ६, ७, ८ (का.)
२४ नवं.	शुक्रवार दिवा लग्न ८
२५ नवं.	शनिवार दिवा लग्न ८ (का.)
२८ नवं.	मंगलवार रात्रौ लग्न गोधूलि, ४, ५, ६, ८
२९ नवं.	बुधवार रात्रौ लग्न गोधूलि, ४ (भद्रा २२।१५ से)
२९ नवं.	बुधवार दिवा लग्न ८, ११ (भद्रा २२।१५ से)
३० नवं.	गुरुवार रात्रौ लग्न ४, ५, ६, ७ (भद्रा ९।२६ यावत्) (का.)
१ दिसं	शुक्रवार दिवा लग्न ९, ११ (का.)
३ दिसं	रविवार रात्रौ लग्न ८ (भद्रा ११। ९ यावत्)
३ दिसं	रविवार दिवा लग्न ११, १२, रात्री ४, ५, ६, ७ (भद्रा ११। ९ यावत्)
सन२०१७	**पोष कृष्णपक्षः**
४ दिसं	सोमवार दिवा लग्न ८, ११, १२, रात्री गोधूलि, ४, ५, ६
	आगे मलमास (धन की सक्रांति) होने से मुहूर्त्त नहीं हैं
	आगे तारा (शुक्र) अस्त होने से मुहूर्त्त नहीं हैं, १२ दिसं २०१७, स्टै. २५।४९
	तारा (शुक्र-उदय) शुद्ध, ५ फर. २०१८, स्टै. ८।४९
सन२०१८	**फाल्गुन शुक्लपक्षः**
१८ फर.	रविवार दिवा लग्न ४, रात्री ८, ९
१९ फर.	सोमवार दिवा लग्न १ (भद्रा १७।२५ से २९।२१ यावत्)
१९ फर.	सोमवार दिवा लग्न ४ (भद्रा १७।२५ से २९।२१ यावत्)
२० फर.	मंगलवार दिवा लग्न १
२० फर.	मंगलवार दिवा लग्न ४, रात्री अ. गोधूलि, ७, ९ (का.)
२१ फर.	बुधवार दिवा लग्न १२ (का.)
सन२०१८	**चैत्र कृष्णपक्षः**
२ मार्च	शुक्रवार रात्रौ लग्न ८, ९
३ मार्च	शनिवार दिवा लग्न १२, ४, रात्री गोधूलि
५ मार्च	सोमवार रात्रौ लग्न ६, ८, ९
६ मार्च	मंगलवार दिवा लग्न १२, १, ४, रात्री गोधूलि, ६
१२ मार्च	सोमवार दिवा लग्न २, रात्री ६ (भद्रा ११।२१ यावत्)
	आगे मीन की सक्रांति होने से मुहूर्त्त नहीं हैं

व्रत-त्यौंहार तालिका, संवत् २०७४, सन २०१७-१८ पूना (महा.)

	चैत्र मास	२२ मई	एकादशी व्रत
२९ मार्च	सिंधारा	२३ मई	प्रदोष व्रत
३० मार्च	गणगोर	२४ मई	मासिक शिवरात्री व्रत
४ अप्रेल	श्री रामनवमी	२५ मई	अमावस्या
४ अप्रेल	बाबा रामेश्वरदास मेला	३ जून	शुक्लानौमी
७ अप्रेल	एकादशी व्रत	४ जून	गंगा दशहरा
७ अप्रेल	श्रीश्यामबाबा जागरण	५ जून	एकादशी व्रत
८ अप्रेल	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्	५ जून	श्रीश्यामबाबा जागरण
८ अप्रेल	प्रदोष व्रत	६ जून	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
११ अप्रेल	हनुमान जयंती	६ जून	प्रदोष व्रत
११ अप्रेल	श्रीरूपाणा धाम बालाजी भीमसर मेला	९ जून	पूर्णिमा
			आषाढ़ मास
११ अप्रेल	पूर्णिमा	१३ जून	चतुर्थीव्रत
	वैशाख मास	१८ जून	श्रीदादीजी नौमी व्रत
१४ अप्रेल	चतुर्थीव्रत	२० जून	एकादशी व्रत
१९ अप्रेल	बूढो बास्योड़ो	२१ जून	प्रदोष व्रत
२० अप्रेल	श्रीदादीजी नौमी व्रत	२२ जून	मासिक शिवरात्री व्रत
२२ अप्रेल	एकादशी व्रत स्मार्त	२४ जून	अमावस्या
२३ अप्रेल	एकादशी व्रत वैष्णव	२५ जून	रथ यात्रा
२४ अप्रेल	प्रदोष व्रत	२ जुलाई	शुक्लानौमी
२४ अप्रेल	मासिक शिवरात्री व्रत	४ जुलाई	चतुर्मास व्रत आरम्भ
२६ अप्रेल	अमावस्या	४ जुलाई	एकादशी व्रत
२९ अप्रेल	आखातीज	४ जुलाई	श्रीश्यामबाबा जागरण
२९ अप्रेल	श्री बिहारीजी के प्रातः चरण दर्शन, सायँ सर्वाङ्ग दर्शन	५ जुलाई	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
		६ जुलाई	प्रदोष व्रत
		९ जुलाई	गुरु पूर्णिमा
४ मई	शुक्लानौमी	९ जुलाई	पूर्णिमा
६ मई	एकादशी व्रत		**श्रावण मास**
६ मई	श्रीश्यामबाबा जागरण	१२ जुलाई	चतुर्थीव्रत
७ मई	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्	१४ जुलाई	नागपञ्चमी (मरु.)
८ मई	प्रदोष व्रत	१८ जुलाई	श्रीदादीजी नौमी व्रत
९ मई	नृसिंह चतुर्दशी	१९ जुलाई	एकादशी व्रत स्मार्त
१० मई	पूर्णिमा	२० जुलाई	एकादशी व्रत वैष्णव
	ज्येष्ठ मास	२१ जुलाई	प्रदोष व्रत
१४ मई	चतुर्थीव्रत	२१ जुलाई	मासिक शिवरात्री व्रत
२० मई	श्रीदादीजी नौमी व्रत	२३ जुलाई	अमावस्या

व्रत-त्यौंहार तालिका, संवत् २०७४, सन २०१७-१८ पूना (महा.)

२५ जुलाई	सिंधारा	३१ अगस्त	श्री रामदेवजी का मेला
२६ जुलाई	तीज	२ सितंबर	एकादशी व्रत
२६ जुलाई	हरियाली-तीज, श्री बिहारीजी का झूला	२ सितंबर	श्रीश्यामबाबा जागरण
		२ सितंबर	वामन द्वादशी
२७ जुलाई	नागपञ्चमी	३ सितंबर	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
१ अगस्त	शुक्लानौमी	३ सितंबर	प्रदोष व्रत
३ अगस्त	एकादशी व्रत	६ सितंबर	श्राद्ध प्रारम्भ
३ अगस्त	श्रीश्यामबाबा जागरण	६ सितंबर	पूर्णिमा
४ अगस्त	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्		**आश्विन मास**
५ अगस्त	प्रदोष व्रत	९ सितंबर	चतुर्थीव्रत
६ अगस्त	सूणमाण्डणा (पूरा दिन शुद्ध है)	१४ सितंबर	श्रीदादीजी नौमी व्रत
		१६ सितंबर	एकादशी व्रत
७ अगस्त	रक्षाबंधन (भद्रा के बाद)	१७ सितंबर	प्रदोष व्रत
		१८ सितंबर	मासिक शिवरात्री व्रत
७ अगस्त	खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	२० सितंबर	अमावस्या
७ अगस्त	नारियल	२१ सितंबर	आश्विन नवरात्रारम्भ
७ अगस्त	पूर्णिमा	२८ सितंबर	दुर्गाष्टमी
	भाद्रपद मास	२९ सितंबर	शुक्लानौमी
११ अगस्त	चतुर्थीव्रत	३० सितंबर	विजया दशमी
१४ अगस्त	जम्माष्टमी व्रत स्मार्त	१ अक्टूबर	एकादशी व्रत
१५ अगस्त	जम्माष्टमी व्रत वैष्णव	१ अक्टूबर	श्रीश्यामबाबा जागरण
१६ अगस्त	गोगानवमी (गुगोजी) श्री नन्दोत्सव	२ अक्टूबर	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
		३ अक्टूबर	प्रदोष व्रत
१६ अगस्त	श्रीदादीजी नौमी व्रत	५ अक्टूबर	शरद पूर्णिमा
१८ अगस्त	वत्सपूजा (बच्छबारस)	५ अक्टूबर	पूर्णिमा
१८ अगस्त	एकादशी व्रत		**कार्तिक मास**
१९ अगस्त	प्रदोष व्रत	८ अक्टूबर	चतुर्थीव्रत (करवाचोथ)
२० अगस्त	मासिक शिवरात्री व्रत	१२ अक्टूबर	होई आठँ (अष्टमी)
२१ अगस्त	भादीमावस	१३ अक्टूबर	श्रीदादीजी नौमी व्रत
२१ अगस्त	श्रीबीरॉबरजी दादी मेला	१३ अक्टूबर	तारा (गुरु अस्त)
२१ अगस्त	अमावस्या	१५ अक्टूबर	एकादशी व्रत
२५ अगस्त	गणेशचतुर्थी (चंद्रदर्शन-निषेध), चौक चानणी	१७ अक्टूबर	धनतेरस
		१७ अक्टूबर	प्रदोष व्रत
२६ अगस्त	ऋषि पंचमी	१७ अक्टूबर	मासिक शिवरात्री व्रत
२८ अगस्त	दूबड़ी सातम	१९ अक्टूबर	दीपावली
३० अगस्त	शुक्लानौमी	१९ अक्टूबर	महालक्ष्मी पूजा

व्रत-त्यौंहार तालिका, संवत् २०७४, सन २०१७-१८ पूना (महा.)

१९ अक्टूबर	अमावस्या	२६ दिसंबर	शांकभरी यात्रा
२१ अक्टूबर	भैयादूज	२७ दिसंबर	शुक्लानौमी
२९ अक्टूबर	आंवला नवमी,	२९ दिसंबर	एकादशी व्रत
	श्रीनारायणी	२९ दिसंबर	श्रीश्यामबाबा जागरण
	बाई जन्मोत्सव	३० दिसंबर	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
२९ अक्टूबर	शुक्लानौमी	३१ दिसंबर	प्रदोष व्रत
३१ अक्टूबर	एकादशी व्रत	*सन २०१८*	
३१ अक्टूबर	श्रीश्यामबाबा जागरण	२ जनवरी	माघ स्नान आरम्भ
१ नवंबर	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्	२ जनवरी	पूर्णिमा
१ नवंबर	प्रदोष व्रत		**माघ मास**
४ नवंबर	पूर्णिमा	५ जनवरी	चतुर्थीव्रत
	मार्गशीर्ष मास	८ जनवरी	स्वामीविवेकानन्द जयंती
६ नवंबर	तारा शुद्ध (गुरु उदय)	१० जनवरी	श्रीदादीजी नौमी व्रत
७ नवंबर	चतुर्थीव्रत	१२ जनवरी	एकादशी व्रत
१२ नवंबर	श्रीदादीजी नौमी व्रत	१४ जनवरी	प्रदोष व्रत
	राणी सतीजी जन्म,	१४ जनवरी	मकर सक्रांति स्टै. १३।१९
	महोत्सव मेला	१४ जनवरी	पुण्यकाल
१४ नवंबर	एकादशी व्रत	१५ जनवरी	मासिक शिवरात्री व्रत
१५ नवंबर	प्रदोष व्रत	१७ जनवरी	अमावस्या
१६ नवंबर	मासिक शिवरात्री व्रत	२२ जनवरी	सूर्य सप्तमी
१८ नवंबर	अमावस्या	२६ जनवरी	शुक्लानौमी
२८ नवंबर	शुक्लानौमी, श्रीनारायणी	२७ जनवरी	श्रीश्यामबाबा जागरण
	बाई के शादी की वर्षगांठ	२८ जनवरी	एकादशी व्रत
३० नवंबर	एकादशी व्रत	२८ जनवरी	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
३० नवंबर	श्रीश्यामबाबा जागरण	२९ जनवरी	प्रदोष व्रत
१ दिसंबर	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्	३१ जनवरी	माघ स्नान पूर्त्ति
१ दिसंबर	प्रदोष व्रत	३१ जनवरी	ग्रस्तोदय खग्रास
३ दिसंबर	पूर्णिमा		चन्द्रग्रहण
	पोष मास	३१ जनवरी	पूर्णिमा
६ दिसंबर	चतुर्थीव्रत		**फाल्गुन मास**
११ दिसंबर	श्रीदादीजी नौमी व्रत	३ फरवरी	चतुर्थीव्रत
१२ दिसंबर	तारा (शुक्र अस्त)	५ फरवरी	तारा शुद्ध (शुक्र उदय)
१३ दिसंबर	एकादशी व्रत	९ फरवरी	श्रीदादीजी नौमी व्रत
१५ दिसंबर	प्रदोष व्रत	११ फरवरी	एकादशी व्रत
१६ दिसंबर	मासिक शिवरात्री व्रत	१३ फरवरी	प्रदोष व्रत
१८ दिसंबर	अमावस्या	१३ फरवरी	महा शिवरात्री व्रत

व्रत-त्यौंहार तालिका, संवत् २०७४, सन २०१७-१८ पूना (महा.)

१५ फरवरी	अमावस्या	१ मार्च	होलिका दहन भद्रा के बाद
१७ फरवरी	फुलरिया दूज	१ मार्च	पूर्णिमा
२३ फरवरी	होलाष्टक प्रारम्भ		**चैत्र मास**
२४ फरवरी	शुक्लानौमी	२ मार्च	छरेंड़ी
२६ फरवरी	बिड़कुला-ढाल थापणा भद्रा के बाद	५ मार्च	चतुर्थीव्रत
		६ मार्च	रंग पंचमी
२६ फरवरी	एकादशी व्रत	९ मार्च	बास्योड़ो
२६ फरवरी	श्रीश्यामबाबा जागरण	११ मार्च	श्रीदादीजी नौमी व्रत
२७ फरवरी	श्री स्वाटुश्यामजी मेला	१३ मार्च	एकादशी व्रत
२७ फरवरी	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्	१४ मार्च	प्रदोष व्रत
२७ फरवरी	प्रदोष व्रत	१५ मार्च	रंग तेरस
१ मार्च	जेलपोणी	१५ मार्च	मासिक शिवरात्री व्रत
		१७ मार्च	अमावस्या

चार-नवरात्रों की जानकारी -

श्रीदेवी भागवते महापुराणे -

आश्विने मधुमासे वा तपोमासे शुचौ तथा ।
चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फलदायकम् ॥३१॥

आश्विन, चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, वा चारों नवरात्रों में सुनने से विशेष फल का देनेवाला है ॥३१॥

(देवीमाहात्म्ये, अध्याय १, श्लोक ३१, श्रीयुत पण्ड़ितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषायाम्)

अपरञ्च -

पठितव्यं प्रयत्नेन नवरात्रचतुष्टये ॥
वेदिकैर्निजगायत्रीप्रीतये नित्यशोमुने ॥२२॥

आषाढ, आश्विन, माघ, चैत्र के शुक्लपक्ष चारों नवरात्र में इस (देवीभागवत) को पढना चाहिये, वैदिकों को अपनी गायत्री की प्रीति के निमित्त सदा पढना चाहिये ॥२२॥

(द्वादशस्कंधे, अध्याय १४, श्लोक २२, श्रीयुत पण्ड़ितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषायाम्)

विशेष - चैत्र और आश्विन शुक्लपक्ष के नवरात्र तो सर्व विदित हैं लेकिन आषाढ और माघ शुक्लपक्ष के नवरात्र को लौकिक भाषा में गुप्त-नवरात्र भी कहते हैं । -

॥ सूर्यग्रहणम् ॥ संवत् २०७४, (सन २०१७-१८)

संवत् २०७४ में भूमण्डल पर कुल दो सूर्यग्रहण होंगें । दोनों ही सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगें, विदेशों में दिखाई देंगें । जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है ।

(१) पूना मितिः भाद्रपद कृष्णा ३० सोमवार, संवत् २०७४, ता. २१ अगस्त २०१७
नोट - यह ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा ।
जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है ।

(१) पूना की मिति के अनुसारः मध्यरात्री १२ बजे बाद के वार-तारीख
मंगलवार, ता. २२ अगस्त २०१७

नोट - विदेशों में जहाँ दिखाई देगा उनके कुछ नाम -

खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर

अकापुल्को,मेक्सीको, अचीली,द्वीप, एकोनाकागुया, अरजेन टाइना, अकरोन,ओहियो, अलास्का,यू.एस.ए., अलास्का,अलास्का, अलबानी,न्यू योर्क, अलबनी,कनाडा, अलबूरक्यूरक्यू,मेक्सिको, अमाजोन,द.अमेरिका, अंदीर,रशिया, अंचोरागी,अलास्का, एंजल फाल्स,वेनिजुएला

(२) पूना मितिः फाल्गुन कृष्णा ३० गुरुवार, संवत् २०७४, ता. १५ फरवरी २०१८
नोट - यह ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा ।
जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है ।

नोट - विदेशों में जहाँ दिखाई देगा उनके कुछ नाम -

खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर

अरजनटाइना,द.अमेरिका, बहिया बलंका,अर्जनटा., बेलिगसेन सागर,एंथराटीका, चिलो,चाइल, चोनोस,चाइल, कोलोरेडो,अरजनटाइना, कोन्सेप्शन,चाइल, कोर्डोबा,अरजनटाइना, फेल्कलैण्ड,द.एटलांटीक, होर्न,म.अमेरिका, झून फरनेन्ड्ज,मचइल, मंगलेन,चाइल, मेन्डोजा,अर्जन्टाइना

ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर

ब्यूनोल एयर्स,अरजनटाइना, लापाल्टा,अरजनटाइना, मार डील प्लाटा , अरजन्टाइना, मेन्टीविडियो,उरुगे

॥ चंद्रग्रहणम् ॥ संवत् २०७४

संवत् २०७४ में भूमण्डल पर कुल दो चंद्रग्रहण होंगें । दोनों ही भारत में दिखाई देंगें ।

(१) यह खण्डग्रास चंद्रग्रहण श्रावण शुक्ला १५ सोमवार, संवत् २०७४, ता. ७ अगस्त २०१७, को होगा । इस खण्डग्रास चंद्रग्रहण का स्पर्श स्टैं.२२।४४ बजे, मध्य २३।४३ बजे और मोक्ष २४।४३ बजे है । इस ग्रहण का सूतक स्टैं. १३।४४ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा । ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है ।

यह खण्डग्रास चंद्रग्रहण भारत के सभी भागों में समान रुप से दिखाई देगा ।

(२) यह ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण माघ शुक्ला १५ बुधवार, संवत् २०७४, ता. ३१ जनवरी २०१८, को होगा । इस खग्रास चंद्रग्रहण का स्पर्श स्टैं.१७।१९ बजे, मध्य १९।०१ बजे और मोक्ष २०।४३ बजे है । इस ग्रहण का सूतक स्टैं. ८।१९ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा । ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है ।

नोट - जहाँ चंद्रोदय स्टैं. १७।१९ बजे के पहिले होगा वहाँ सम्पूर्ण खग्रास चंद्रग्रहण देखा जा सकता है ।

सम्पूर्ण खग्रास चंद्रग्रहण दिखाई देने वाले कुछ नगर - कलकत्ता, निकोबार द्वी.(भा.), सदिया (असम), जोरहाट (असम)

नोट - जहाँ चंद्रोदय स्टैं. १७।१९ बजे के बाद और २०।४३ बजे के पहिले होगा वहाँ ग्रस्तोदय ग्रहण होगा ।

ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण दिखाई देने वाले कुछ नगर - पूना, मुम्बई, दिल्ली, बैंगलुरू, झुञ्झुनू, कुमारी अंतदीप (भा.), के२ शिखर (भारत), पोरबंदर (गुज.), द्वारका (गुज.) ।

स्पष्टता के लिए कुछ नगरों का चंद्रोदय दिया है ।

॥ प्रमुख नगरों का चंद्रोदय ॥

तारीख ३१ जनवरी २०१८, (स्टैं.समय में)

शहर	चंद्रोदय घं. मि.
पूना	१८।२३
मुम्बई	१८।२६
कोलकात्ता	१७।१६
दिल्ली	१७।५३
बंगलुरू	१८।१५
झुञ्झुनू	१८।०१
कुमारीअंत. (भा.)	१८।२१
निकोबारद्वी (भा.)	१७।१३
के२शिखर (भा.)	१७।४३
पोरबंदर (गुज.)	१८।३५
द्वारका (गुज.)	१८।३७
सदिया (असम)	१६।३७
जोरहाट (असम)	१६।४५

तारा (गुरु) का उदयास्त (स्टै.समय में) (उन्नतांश, ८.२)
संवत् २०७४ (ई.सन २०१७-१८)

	तारा प्रारम्भ (पश्चि.अस्त)			तारा शुद्ध (पूर्व.उदय)			
शहर	तारीख		घं. मि.	तारीख			घं. मि.
पूना	१३ अक्टू. २०१७	रात्रि	३।०८	से ६ नवं.	२०१७	प्रातः	९।१९ तक
मुम्बई	१३ अक्टू. २०१७	रात्रि	१।१७	से ६ नवं.	२०१७	प्रातः	९।०९ तक
कोलकात्ता	१३ अक्टू. २०१७	प्रातः	७।५५	से ६ नवं.	२०१७	प्रातः	८।१८ तक
दिल्ली	११ अक्टू. २०१७	सायँ	४।५०	से ६ नवं.	२०१७	प्रातः	९।२१ तक
बंगलुरू	१४ अक्टू. २०१७	रात्रि	११।०६	से ६ नवं.	२०१७	मध्या.	१२।५३ तक
झुञ्झुनू	११ अक्टू. २०१७	रात्रि	८।५४	से ६ नवं.	२०१७	प्रातः	९।०८ तक

नोट - मध्या. को मध्यान्ह समझें ।
जैसे - पूना में गुरु का तारा प्रारम्भ (पश्चि.अस्त) ता. १३ अक्टूबर २०१७ को रात्रि ३ बजकर ०८ मिनट है और तारा शुद्ध (पूर्व.उदय) ता. ६ नवंबर २०१७ को प्रातः ९ बजकर १९ मिनट है ।

तारा (शुक्र) का उदयास्त (स्टै.समय में) (उन्नतांश, ६.४)
संवत् २०७४ (ई.सन २०१७-१८)

	तारा प्रारम्भ (पूर्व.अस्त)			तारा शुद्ध (पश्चि.उदय)			
शहर	तारीख		घं. मि.	तारीख			घं. मि.
पूना	१२ दिसं. २०१७	रात्रि	१।४९	से ५ फर.	२०१८	प्रातः	८।४९ तक
मुम्बई	१२ दिसं. २०१७	रात्रि	१२।३५	से ५ फर.	२०१८	प्रातः	१०।०३ तक
कोलकात्ता	१२ दिसं. २०१७	मध्या.	१२।४०	से ५ फर.	२०१८	रात्रि	९।५२ तक
दिल्ली	११ दिसं. २०१७	प्रातः	१०।००	से ६ फर.	२०१८	रात्रि	११।४८ तक
बंगलुरू	१३ दिसं. २०१७	मध्या.	२।०८	से ४ फर.	२०१८	रात्रि	८।११ तक
झुञ्झुनू	११ दिसं. २०१७	मध्या.	१२।४२	से ६ फर.	२०१८	रात्रि	९।१३ तक

नोट - मध्या. को मध्यान्ह समझें ।
जैसे - पूना में शुक्र का तारा प्रारम्भ (पूर्व.अस्त) ता. १२ दिसंबर २०१७ को रात्रि १ बजकर ४९ मिनट है और तारा शुद्ध (पश्चि.उदय) ता. ५ फरवरी २०१८ को प्रातः ८ बजकर ४९ मिनट है ।

चौघड़िया ज्ञान

चौघड़ियों के सात नाम हैं और इनके सात ही स्वामी होते हैं ।

स्वामी नाम - रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

चौघड़िया नाम - उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चल, काल

प्रतिदिन आठ चौघड़ियों का भोग दिन में होता है और आठ चौघड़ियों का भोग रात्रि में होता है । इनमें वार की प्रधानता है । दिन के चौघड़ियों में जिस चौधड़िये का जो स्वामी है वही चौघड़िया सूर्योदय से प्रारम्भ होता है । जैसे रविवार का चौघड़िया उद्वेग से प्रारम्भ होता है, सोमवार का अमृत से आदि । रात्रि में पांचवाँ चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारम्भ होता है । जैसे रविवार का चौघड़िया शुभ से प्रारम्भ होता है, सोमवार का चल से, स्पष्टता के लिए आगे चक्र दिया है ।

दिन का चौघड़िया							रात्रि का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

फल = रविवार आदि वारों के अनुसार इनका अलग-अलग समय और फल होता है । जिस चौघड़िया का जैसा नाम है उसका वैसा ही फल होता है । जैसे कि अमृत, लाभ, शुभ नाम वाले किसी भी कार्य के लिए उत्तम फलदायक हैं । चल नामवाला मशीन के लिए उत्तम फलदायक हैं । शेष सामान्य हैं ।

दिनमान = सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान कहते हैं । सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाने पर दिनमान होता है । दिनमान का आठवाँ भाग एक चौघड़िया का मान (समय) होता है ।

रात्रिमान = सूर्यास्त से अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं (दूसरे दिन के सूर्योदय में से पहिले दिन का सूर्यास्त घटाने पर रात्रिमान होता है । रात्रिमान का आठवाँ भाग एक चौघड़िया का मान (समय) होता है ।

एक चौघड़िया का मान (समय) जानने की विधि -

सूर्यास्त के घंटा-मिनटादि में से सूर्योदय के घंटा-मिनटादि घटाने से दिनमान होता है। दिनमान में आठ का भाग देने से एक चौघड़िया का मान (समय) आता है। यही मान (समय) सूर्योदय में जोडने से प्रथम चौघड़िया का समाप्तिकाल आता है। इसी संख्या में दुबारा एक चौघड़िया का मान (समय) जोडने से दूसरे चौघड़िये का समाप्तिकाल होता है इसी क्रमानुसार जोड़ने से आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात किया जा सकता है। रात्रि के चौघड़ियों की भी यही क्रिया है। सरलता के लिए यहाँ दिन के चौधड़िया का एक उदाहरण दिया है।

उदाहरण : ता. १ अप्रेल २०१७ शनिवार को पूना में सूर्योदय ६ बजकर ३२ मिनट २६ सेकण्ड और सूर्यास्त १८ बजकर ४४ मिनट ४१ सेकण्ड है। यहाँ सूर्यास्त में से सूर्योदय धटाकर आठ का भाग देने से एक चौघड़िया का मान (समय) १ घंटा ३१ मिनट ३२ सेकण्ड हुआ इसे सूर्योदय ६ बजकर ३२ मिनट २६ सेकण्ड में जोड़ने से प्रथम चौघड़िया काल का ८ बजकर ०३ मिनट ५७ सेकण्ड पर समाप्तिकाल हुआ। इसी संख्या में दुबारा एक चौघड़िया का मान (समय) जोड़ने से दूसरा चौघड़िया शुभ का ९ बजकर ३५ मिनट २९ सेकण्ड पर समाप्तिकाल हुआ। इसी तरह पुनः पुनः एक चौघड़िया का मान (समय) जोड़ने से दिन के आठों चौघड़ियों का समय जाना जा सकता है।

संवत् २०७४, दिन के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

ता. १ अप्रेल २०१७ शनिवार

शहर	पूना	मुम्बई	कोलकात्ता	दिल्ली	बंगलुरू	झुञ्झुनू
	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
सूर्योदय	६।३२।२६	६।३६।२४	५।३२।३६	६।१५।१७	६।१९।२४	६।२२।३८
चौ.मान	१।३१।३२	१।३१।३४	१।३१।५४	१।३२।३०	१।३१।०३	१।३२।२७
काल	८।०३।५७	८।०७।५९	७।०४।३०	७।४७।४७	७।५०।२७	७।५५।०५
शुभ	९।३५।२९	९।३९।३३	८।३६।२४	९।२०।१८	९।२१।२९	९।२७।३२
रोग	११।०७।०१	११।११।०७	१०।०८।१८	१०।५२।४८	१०।५२।३२	१०।५९।५९
उद्वेग	१२।३८।३३	१२।४२।४१	११।४०।१२	१२।२५।१८	१२।२३।३५	१२।३२।२६
चल	१४।१०।०५	१४।१४।१६	१३।१२।०६	१३।५७।४९	१३।५४।३८	१४।०४।५३
लाभ	१५।४१।३७	१५।४५।५०	१४।४४।००	१५।३०।१९	१५।२५।४०	१५।३७।२०
अमृत	१७।१३।०९	१७।१७।२४	१६।१५।५४	१७।०२।५०	१६।५६।४३	१७।०९।४८
काल	१८।४४।४१	१८।४८।५८	१७।४७।४७	१८।३५।२०	१८।२७।४६	१८।४२।१५

संवत् २०७४, दिन के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

॥ 卐 *श्रीमहालक्ष्मी पूजनम्* 卐 ॥

ता. १९ अक्टूबर २०१७ गुरुवार

शहर	पूना	मुम्बई	कोलकात्ता	दिल्ली	बंगलुरू	झुञ्झुनू
	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
सूर्योदय	६।३२।५६	६।३७।२४	५।३७।४५	६।२८।०५	६।१३।४८	६।३४।४४
चौ.मान	१।२६।३६	१।२६।३१	१।२५।४८	१।२४।२८	१।२७।४०	१।२४।३५
शुभ	७।५९।३२	८।०३।५५	७।०३।३३	७।५२।३३	७।४१।२८	७।५९।१९
रोग	९।२६।०८	९।३०।२६	८।२९।२०	९।१७।०१	९।०९।०८	९।२३।५४
उद्वेग	१०।५२।४५	१०।५६।५७	९।५५।०८	१०।४१।२९	१०।३६।४७	१०।४८।२९
चल	१२।१९।२१	१२।२३।२९	११।२०।५६	१२।०५।५७	१२।०४।२७	१२।१३।०५
लाभ	१३।४५।५७	१३।५०।००	१२।४६।४३	१३।३०।२५	१३।३२।०७	१३।३७।४०
अमृत	१५।१२।३३	१५।१६।३१	१४।१२।३१	१४।५४।५३	१४।५९।४७	१५।०२।१५
काल	१६।३९।०९	१६।४३।०२	१५।३८।१८	१६।१९।२१	१६।२७।२६	१६।२६।५०
शुभ	१८।०५।४५	१८।०९।३३	१७।०४।०६	१७।४३।४८	१७।५५।०६	१७।५१।२६

रात्रि के चौघड़ियों का समाप्तिकाल

	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.	घं.मि.से.
सूर्यास्त	१८।०५।४५	१८।०९।३३	१७।०४।०६	१७।४३।४८	१७।५५।०६	१७।५१।२६
चौ.मान	१।३३।२६	१।३३।३१	१।३४।१६	१।३५।३७	१।३२।२१	१।३५।२९
अमृत	१९।३९।१२	१९।४३।०४	१८।३८।२१	१९।१९।२५	१९।२७।२८	१९।२६।५५
चल	२१।१२।३८	२१।१६।३६	२०।१२।३७	२०।५५।०२	२०।५९।४९	२१।०२।२४
रोग	२२।४६।०४	२२।५०।०७	२१।४६।५३	२२।३०।३९	२२।३२।१०	२२।३७।५४
काल	२४।१९।३०	२४।२३।३८	२३।२१।०९	२४।०६।१६	२४।०४।३२	२४।१३।२३
लाभ	२५।५२।५६	२५।५७।१०	२४।५५।२४	२५।४१।५२	२५।३६।५३	२५।४८।५२
उद्वेग	२७।२६।२३	२७।३०।४१	२६।२९।४०	२७।१७।२९	२७।०९।१५	२७।२४।२२
शुभ	२८।५९।४९	२९।०४।१३	२८।०३।५६	२८।५३।०६	२८।४१।३६	२८।५९।५१
अमृत	३०।३३।१५	३०।३७।४४	२९।३८।११	३०।२८।४३	३०।१३।५८	३०।३५।२१

संवत् २०७४ में अमृतसिद्धि योग (स्टै.घंटा-मिनट)

सन २०१७		प्रारंभ	समय		समाप्ति	समय
१ अप्रेल	शनिरोहिणी	प्रातः	६।३२	से	रात्रि	२।५१
९ अप्रेल	रविहस्त	रात्रि	१।५५	से	रात्रिअन्त	६।२५
२५ अप्रेल	भौमाऽश्विनि	रात्रि	९।५३	से	रात्रिअन्त	६।१४
२९ अप्रेल	शनिरोहिणी	प्रातः	६।१२	से	दिन	१०।५४
७ मई	रविहस्त	प्रातः	७।४४	से	रात्रिअन्त	६।०८
२३ मई	भौमाऽश्विनि	प्रातः	८।२३	से	रात्रिअन्त	६।०१
४ जून	रविहस्त	प्रातः	६।०१	से	सायँ	३।२२
७ जून	बुधानुराधा	रात्रि	११।१८	से	रात्रिअन्त	६।०१
२० जून	भौमाऽश्विनि	प्रातः	६।०३	से	सायँ	३।४४
५ जुलाई	बुधानुराधा	प्रातः	६।०७	से	रात्रिअन्त	६।०७
१० जुलाई	सोमश्रवण	सायँ	७।०४	से	रात्रिअन्त	६।०९
२ अगस्त	बुधानुराधा	प्रातः	६।१६	से	सायँ	३।१८
७ अगस्त	सोमश्रवण	प्रातः	६।१८	से	रात्रि	३।२८
११ अगस्त	शुक्ररेवति	रात्रिअन्त	६।१६	से	रात्रिअन्त	६।१९
४ सितंबर	सोमश्रवण	प्रातः	६।२४	से	दिन	११।१५
८ सितंबर	शुक्ररेवति	मध्यान्ह	१२।३०	से	रात्रिअन्त	६।२५
६ अक्टूबर	शुक्ररेवति	प्रातः	६।३०	से	रात्रि	७।३०
९ नवंबर	गुरुपुष्यामृत	मध्यान्ह	१।३७	से	रात्रिअन्त	६।४२
७ दिसंबर	गुरुपुष्यामृत	प्रातः	६।५८	से	रात्रि	७।५५
३० दिसंबर	शनिरोहिणी	रात्रि	८।३५	से	रात्रिअन्त	७।१०
सन २०१८						
७ जनवरी	रविहस्त	रात्रि	१।०९	से	रात्रिअन्त	७।१२
२७ जनवरी	शनिरोहिणी	प्रातः	७।१३	से	रात्रि	४।०२
४ फरवरी	रविहस्त	दिन	१०।२८	से	रात्रिअन्त	७।१०
२० फरवरी	भौमाऽश्विनि	मध्यान्ह	२।०६	से	रात्रिअन्त	७।०३
२४ फरवरी	शनिरोहिणी	प्रातः	७।०१	से	दिन	११।२८
४ मार्च	रविहस्त	प्रातः	६।५५	से	रात्रि	८।१५
७ मार्च	बुधानुराधा	रात्रि	१०।३१	से	रात्रिअन्त	६।५२

राहु काल - इस विशेष काल में १ घंटा ३० मिनट के लिए राहुकाल का अनिष्टकारी समय होता है । किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में यथा सम्भव इस समय को टाल देना चाहिए - दक्षिण भारत (कर्नाटक आदि) में ऐसी मान्यता है अन्यत्र नहीं ।

सोमवार	प्रातः	७।३०	से	९।०० बजे तक
मंगलवार	दोपहर बाद	३।००	से	४।३० बजे तक
बुधवार	दोपहर	१२।००	से	१।३० बजे तक
गुरूवार	दोपहर	१।३०	से	३।०० बजे तक
शुक्रवार	प्रातः	१०।३०	से	१२।०० बजे तक
शनिवार	प्रातः	९।००	से	१०।३० बजे तक
रविवार	सायं	४।३०	से	६।०० बजे तक

सूर्य सक्रान्ति (प्रवेश समय) सन २०१७-१८

मेष	- १३ अप्रेल	२०१७	रात्रि	१।२० से
वृष	- १४ मई	२०१७	रात्रि	१०।१४ से
मिथुन	- १४ जून	२०१७	रात्रि	४।५५ से
कर्क	- १६ जुलाई	२०१७	सायँ	३।५२ से
सिंह	- १६ अगस्त	२०१७	रात्रि	१२।२२ से
कन्या	- १६ सितंबर	२०१७	रात्रि	१२।२२ से
तुला	- १७ अक्टूबर	२०१७	मध्यान्ह	१२।२० से
वृश्चिक	- १६ नवंबर	२०१७	मध्यान्ह	१२।०५ से
धनु	- १५ दिसंबर	२०१७	रात्रि	२।४० से
मकर	- १४ जनवरी	२०१८	मध्यान्ह	१।१९ से
कुंभ	- १२ फरवरी	२०१८	रात्रि	२।१३ से
मीन	- १४ मार्च	२०१८	रात्रि	११।०१ से

॥ दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ॥ स्थलः- पूना (महा.)

चैत्र शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वसंत
राजस्थान में चैत सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में चैत्र शुक्लपक्ष
ता. २९ मार्च २०१७ से ११ अप्रेल २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
क्षयः	प्रतिपदा (१)	मंगल	रा.अ. ५।४७	.....	.....	तिथि क्षय , संवत्सरारंभः मंगलवार को
२९/ ३	द्वितिया (२)	बुध	रात्रि २।४९	६।३५	६।४४	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०), पंचक समाप्ति मध्यान्ह ११।३८, सिंधारा
३०/ ३	तृतिया (३)	गुरु	रात्रि ११।४५	६।३४	६।४४	मत्स्योत्पत्ति, अरुन्धती व्रत-पूजा, गणगोर पूजा समापन, रज्ञव ७
३१/ ३	चतुर्थी (४)	शुक्र	रात्रि ८।४३	६।३३	६।४४	भद्रा दिन १०।१३ से रात्रि ८।४३ तक
१/ ४	पञ्चमी (५)	शनि	सायँ ५।५१	६।३२	६।४५	डोलोत्सव, अप्रेल
२/ ४	षष्ठी (६)	रवि	मध्या. ३।१६	६।३२	६।४५	स्कन्द षष्ठी व्रत
३/ ४	सप्तमी (७)	सोम	मध्या. १।०४	६।३१	६।४५	भद्रा मध्यान्ह १।०४ से रात्रि १२।०८ तक
४/ ४	अष्टमी (८)	मंगल	दिन ११।१९	६।३०	६।४५	अष्टमी की कड़ाई, श्री रामनवमी, बाबा रामेश्वरदास मेला
५/ ४	नवमी (९)	बुध	दिन १०।०४	६।२९	६।४६	उदया नवमी
६/ ४	दशमी (१०)	गुरु	प्रातः ९।१६	६।२८	६।४६	भद्रा रात्रि ९।०४ से
७/ ४	एकाद.(११)	शुक्र	प्रातः ८।५८	६।२८	६।४६	भद्रा प्रातः ८।५८ तक, कामदा एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
८/ ४	द्वादशी (१२)	शनि	प्रातः ९।०४	६।२७	६।४६	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत, हरि दमनोत्सव
९/ ४	त्रयोद. (१३)	रवि	दिन ९।३५	६।२६	६।४६	जैन महावीर जयंती
१०/ ४	चतुर्दशी (१४)	सोम	दिन १०।२७	६।२५	६।४७	भद्रा दिन १०।२७ से रात्रि ११।०१ तक, पूर्णिमा व्रत
११/ ४	पूर्णिमा (१५)	मंगल	मध्या. ११।४१	६।२५	६।४७	हनुमान जयंती, श्रीरूपाणा धाम बालाजी भीमसर मेला, पूर्णिमा पुण्य, बैशाख स्नान प्रारम्भ, चित्रान्नदान और भक्षण

बार : *आश्लेषा* - ता. ५/ ४ रात्रि १०।४९ से ता. ६/ ४ रात्रि १०।५९ तक ।
मघा - ता. ६/ ४ रात्रि १०।५९ से ता. ७/ ४ रात्रि ११।३४ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मेष* - ता.२९/ ३ मध्यान्ह ११।३८ से ।
वृष - ता.३१/ ३ मध्यान्ह १२।३१ से । *मिथुन* - ता. २/ ४ मध्यान्ह १।५८ से ।
कर्क - ता. ४/ ४ सायँ ५।१७ से । *सिंह* - ता. ६/ ४ रात्रि १०।५९ से ।
कन्या - ता. ९/ ४ प्रातः ६।५२ से । *तुला* - ता.११/ ४ सायँ ४।३५ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

वैशाख कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वसंत
राजस्थान में बैशाख बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में चैत्र कृष्णपक्ष
ता. १२ अप्रेल २०१७ से २६ अप्रेल २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१२/ ४	प्रतिपदा (१)	बुध	मध्या. १।१५	६।२४	६।४७	
१३/ ४	द्वितिया (२)	गुरु	मध्या. ३।०९	६।२३	६।४७	भद्रा रात्रि ४।१३ से
१४/ ४	तृतिया (३)	शुक्र	सायँ ५।२२	६।२२	६।४८	भद्रा सायँ ५।२२ तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।३१, व्यतीपात दिन ९।५८ से, डा. आम्बेडकर जयन्ती
१५/ ४	चतुर्थी (४)	शनि	सायँ ७।४७	६।२२	६।४८	अनुसूया जयंती, व्यतीपात दिन १०।४९ तक
१६/ ४	पञ्चमी (५)	रवि	रात्रि १०।१७	६।२१	६।४८	
१७/ ४	षष्ठी (६)	सोम	रात्रि १२।३९	६।२०	६।४८	भद्रा रात्रि १२।३९ से
१८/ ४	सप्तमी (७)	मंगल	रात्रि २।४१	६।१९	६।४९	भद्रा मध्यान्ह १।४४ तक
१९/ ४	अष्टमी (८)	बुध	रात्रि ४।१०	६।१९	६।४९	बूढो बास्योड़ो
२०/ ४	नवमी (९)	गुरु	रात्रि ४।५७	६।१८	६।४९	श्रीदादीजी नौमी व्रत
२१/ ४	दशमी (१०)	शुक्र	रात्रि ४।५६	६।१७	६।४९	भद्रा सायँ ५।०३ से रात्रि ४।५६ तक, पंचक प्रारम्भ मध्यान्ह २।१८
२२/ ४	एकाद. (११)	शनि	रात्रि ४।०५	६।१७	६।५०	पंचक, वरुथिनि एकादशी व्रत स्मार्त
२३/ ४	द्वादशी (१२)	रवि	रात्रि २।२७	६।१६	६।५०	पंचक, वरुथिनि एकादशी व्रत वैष्णव
२४/ ४	त्रयोद. (१३)	सोम	रात्रि १२।०५	६।१५	६।५०	भद्रा रात्रि १२।०५ से, पंचक, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री व्रत
२५/ ४	चतुर्दशी (१४)	मंगल	रात्रि ९।०९	६।१५	६।५१	भद्रा दिन १०।४१ तक, पंचक समाप्ति रात्रि ९।५३
२६/ ४	अमाव. (३०)	बुध	सायँ ५।४७	६।१४	६।५१	देव-पितृ कार्य में अमावस्या

बार : *ज्येष्ठा* - ता.१५/ ४ मध्यान्ह १।३५ से ता.१६/ ४ सायँ ४।३५ तक ।
मूल - ता.१६/ ४ सायँ ४।३५ से ता.१७/ ४ सायँ ७।३१ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *वृश्चिक* - ता.१३/ ४ रात्रि ३।५९ से ।
धनु - ता.१६/ ४ सायँ ४।३५ से । *मकर* - ता.१८/ ४ रात्रि ४।४६ से ।
कुंभ - ता.२१/ ४ मध्यान्ह २।१८ से । *मीन* - ता.२३/ ४ रात्रि ७।५५ से ।
मेष - ता.२५/ ४ रात्रि ९।५३ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह समझें ।

वैशाख शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- ग्रीष्म

राजस्थान में बैशाख सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में वैशाख शुक्लपक्ष

ता. २७ अप्रेल २०१७ से १० मई २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२७/ ४	प्रतिपदा (१)	गुरु	मध्या. २।१०	६।१३	६।५१	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२८/ ४	द्वितिया (२)	शुक्र	दिन १०।३०	६।१३	६।५१	कल्पादि, शिवाजी जयंती, परशुराम जयंती, सावान ८
२९/ ४	तृतिया (३)	शनि	प्रातः ६।५६	६।१२	६।५२	भद्रा सायँ ५।१५ से रात्रि ३।३९ तक, आख्वातीज, श्री बिहारीजी के प्रातः चरण दर्शन, सायँ सर्वाङ्ग दर्शन
क्षयः	चतुर्थी (४)	शनि	रात्रि ३।३९	.....	.....	तिथि क्षय
३०/ ४	पञ्चमी (५)	रवि	रात्रि १२।४९	६।१२	६।५२	श्री आद्यशंकराचार्य जयंती
१/ ५	षष्ठी (६)	सोम	रात्रि १०।३१	६।११	६।५२	श्री रामानुज जयंती, मई, महाराष्ट्र दिवस, विश्व श्रम दिवस
२/ ५	सप्तमी (७)	मंगल	रात्रि ८।५२	६।११	६।५३	भद्रा रात्रि ८।५२ से, गंगोत्पत्ति, गंगापूजन
३/ ५	अष्टमी (८)	बुध	सायँ ७।५२	६।१०	६।५३	भद्रा प्रातः ८।१७ तक
४/ ५	नवमी (९)	गुरु	सायँ ७।३१	६।१०	६।५३	शुक्लानौमी, सीता नवमी
५/ ५	दशमी (१०)	शुक्र	सायँ ७।४६	६।०९	६।५४	
६/ ५	एकाद.(११)	शनि	रात्रि ८।३३	६।०९	६।५४	भद्रा प्रातः ८।०६ से रात्रि ८।३३ तक, मोहिनी एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण
७/ ५	द्वादशी (१२)	रवि	रात्रि ९।४६	६।०८	६।५४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, टैगोर जयन्ती
८/ ५	त्रयोद. (१३)	सोम	रात्रि ११।१९	६।०८	६।५५	प्रदोष व्रत
९/ ५	चतुर्दशी (१४)	मंगल	रात्रि १।१०	६।०७	६।५५	भद्रा रात्रि १।१० से, नृसिंह चतुर्दशी, व्यतीपात सायँ ३।३१ से
१०/ ५	पूर्णिमा (१५)	बुध	रात्रि ३।१४	६।०७	६।५५	भद्रा मध्यान्ह २।१० तक, कूर्मोत्पत्ति, पूर्णिमा व्रत और पुण्य, बैशाख्वस्नानपूर्त्ति, धर्म प्रीत्यर्थं जलकुंभदान, व्यतीपात सायँ ४।०५ तक

बार : *आश्लेषा* - ता. २/ ५ रात्रि ४।३० से ता. ३/ ५ रात्रि ४।२६ तक ।

मघा - ता. ३/ ५ रात्रि ४।२६ से ता. ४/ ५ रात्रि ५।०० तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *वृष* - ता.२७/ ४ रात्रि ९।४६ से ।

मिथुन - ता.२९/ ४ रात्रि ९।३९ से । *कर्क* - ता. १/ ५ रात्रि ११।२९ से ।

सिंह - ता. ३/ ५ रात्रि ४।२६ से । *कन्या* - ता. ६/ ५ मध्यान्ह १२।२९ से ।

तुला - ता. ८/ ५ रात्रि १०।५० से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- ग्रीष्म
राजस्थान में ज्येठ बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में वैशाख्व कृष्णपक्ष
ता. ११ मई २०१७ से २५ मई २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख्व	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
११/ ५	प्रतिपदा (१)	गुरु	रा.अ. ५।२८	६।०६	६।५६	
१२/ ५	द्वितिया (२)	शुक्र	दिन-रात	६।०६	६।५६	नारद जयंती, वीणादान
१३/ ५	द्वितिया (२)	शनि	प्रातः ७।५१	६।०६	६।५६	भद्रा रात्रि ९।०३ से
१४/ ५	तृतिया (३)	रवि	दिन १०।१६	६।०५	६।५७	भद्रा दिन १०।१६ तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।५३
१५/ ५	चतुर्थी (४)	सोम	मध्या. १२।३८	६।०५	६।५७	
१६/ ५	पञ्चमी (५)	मंगल	मध्या. २।४८	६।०४	६।५८	
१७/ ५	षष्ठी (६)	बुध	सायँ ४।३३	६।०४	६।५८	भद्रा सायँ ४।३३ से रात्रिअन्त ५।१४ तक
१८/ ५	सप्तमी (७)	गुरु	सायँ ५।४५	६।०४	६।५८	पंचक प्रारम्भ रात्रि १०।११
१९/ ५	अष्टमी (८)	शुक्र	सायँ ६।१३	६।०४	६।५९	पंचक
२०/ ५	नवमी (९)	शनि	सायँ ५।५४	६।०३	६।५९	भद्रा रात्रिअन्त ५।२५ से, पंचक, श्रीदादीजी नौमी व्रत
२१/ ५	दशमी (१०)	रवि	सायँ ४।४४	६।०३	६।५९	भद्रा सायँ ४।४४ तक, पंचक
२२/ ५	एकाद. (११)	सोम	मध्या. २।४६	६।०३	७।००	पंचक, अपरा एकादशी व्रत
२३/ ५	द्वादशी (१२)	मंगल	मध्या. १२।०५	६।०३	७।००	पंचक समाप्ति प्रातः ८।२३, प्रदोष व्रत
२४/ ५	त्रयोद. (१३)	बुध	प्रातः ८।५०	६।०२	७।०१	भद्रा प्रातः ८।५० से सायँ ७।०२ तक, मासिक शिवरात्री व्रत
क्षयः	चतुर्दशी (१४)	बुध	रा.अ. ५।१०	.....	.....	तिथि क्षय
२५/ ५	अमाव. (३०)	गुरु	रात्रि १।१६	६।०२	७।०१	शनि जयन्ती, देव-पितृ कार्य में अमावस्या, वटपूजन मरुस्थल में, भाऊका ३०, वट सावित्री व्र. (मरु.)

बार : *ज्येष्ठा* - ता.१२/ ५ रात्रि ८।०८ से ता.१३/ ५ रात्रि ११।०६ तक ।
मूल - ता.१३/ ५ रात्रि ११।०६ से ता.१४/ ५ रात्रि २।०४ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *वृश्चिक* - ता.११/ ५ दिन १०।३४ से ।
धनु - ता.१३/ ५ रात्रि ११।०६ से । *मकर* - ता.१६/ ५ मध्यान्ह ११।३२ से ।
कुंभ - ता.१८/ ५ रात्रि १०।११ से । *मीन* - ता.२०/ ५ रात्रिअन्त ५।१८ से ।
मेष - ता.२३/ ५ प्रातः ८।२३ से । *वृष* - ता.२५/ ५ प्रातः ८।२८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- ग्रीष्म
राजस्थान में ज्येठ सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
ता. २६ मई २०१७ से ९ जून २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२६/ ५	प्रतिपदा (१)	शुक्र	रात्रि ९।१९	६।०२	७।०१	श्री गंगादशाश्वमेधस्नान प्रा.
२७/ ५	द्वितिया (२)	शनि	सायँ ५।३२	६।०२	७।०२	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती१५), रंभा व्रत, नेहरुजी पुण्य तिथि
२८/ ५	तृतिया (३)	रवि	मध्या. २।०५	६।०२	७।०२	भद्रा रात्रि १२।३३ से, राणा प्रताप जयंती, रमजान ९
२९/ ५	चतुर्थी (४)	सोम	मध्या.११।०९	६।०२	७।०२	भद्रा मध्यान्ह ११।०९ तक
३०/ ५	पञ्चमी (५)	मंगल	प्रातः ८।४९	६।०२	७।०३	
३१/ ५	षष्ठी (६)	बुध	प्रातः ७।१२	६।०१	७।०३	
१/ ६	सप्तमी (७)	गुरु	प्रातः ६।२२	६।०१	७।०४	भद्रा प्रातः ६।२२ से सायँ ६।१३ तक, दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, जून
२/ ६	अष्टमी (८)	शुक्र	प्रातः ६।१६	६।०१	७।०४	
३/ ६	नवमी (९)	शनि	प्रातः ६।५२	६।०१	७।०४	शुक्लानौमी, व्यतीपात रात्रि ९।२६ से
४/ ६	दशमी (१०)	रवि	प्रातः ८।०४	६।०१	७।०५	भद्रा रात्रि ८।५१ से, गंगा दशहरा व्रत, व्यतीपात रात्रि ९।३८ तक
५/ ६	एकाद.(११)	सोम	दिन ९।४४	६।०१	७।०५	भद्रा दिन ९।४४ तक, निर्जला एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण
६/ ६	द्वादशी (१२)	मंगल	मध्या.११।४६	६।०१	७।०५	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत, गुजरातियों का वटसावित्री व्रतारंभ
७/ ६	त्रयोद. (१३)	बुध	मध्या. १।५९	६।०१	७।०६	
८/ ६	चतुर्दशी (१४)	गुरु	सायँ ४।१९	६।०१	७।०६	भद्रा सायँ ४।१९ से रात्रिअन्त ५।३० तक, वटसावित्री व्रत
९/ ६	पूर्णिमा (१५)	शुक्र	सायँ ६।४०	६।०१	७।०६	कबीर जयंती, ज्येष्ठी योग

बार : *आश्लेषा* - ता.३०/ ५ मध्यान्ह ११।५६ से ता.३१/ ५ मध्यान्ह ११।१२ तक ।
मघा - ता.३१/ ५ मध्यान्ह ११।१२ से ता. १/ ६ मध्यान्ह ११।१३ तक ।
ज्येष्ठा - ता. ८/ ६ रात्रि २।१३ से ता. ९/ ६ रात्रिअन्त ५।०८ तक ।
मूल - ता. ९/ ६ रात्रिअन्त ५।०८ से ।

चंद्र (जन्म) राशि :
मिथुन - ता.२७/ ५ प्रातः ७।३२ से ।
कर्क - ता.२९/ ५ प्रातः ७।५१ से । *सिंह* - ता.३१/ ५ मध्यान्ह ११।१२ से ।
कन्या - ता. २/ ६ सायँ ६।१७ से । *तुला* - ता. ४/ ६ रात्रि ४।३१ से ।
वृश्चिक - ता. ७/ ६ सायँ ४।३४ से । *धनु* - ता. ९/ ६ रात्रिअन्त ५।०८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

आषाढ़ कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- ग्रीष्म
राजस्थान में साढ बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
ता. १० जून २०१७ से २४ जून २०१७ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१०/ ६	प्रतिपदा (१)	शनि	रात्रि ९।००	६।०१	७।०७	
११/ ६	द्वितिया (२)	रवि	रात्रि ११।१४	६।०२	७।०७	
१२/ ६	तृतिया (३)	सोम	रात्रि १।१७	६।०२	७।०७	भद्रा मध्यान्ह १२।१७ से रात्रि १।१७ तक
१३/ ६	चतुर्थी (४)	मंगल	रात्रि ३।०२	६।०२	७।०८	अंगारकी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि १०।११
१४/ ६	पञ्चमी (५)	बुध	रात्रि ४।२२	६।०२	७।०८	पंचक प्रारम्भ रात्रि ४।२५
१५/ ६	षष्ठी (६)	गुरु	रा.अ. ५।१०	६।०२	७।०८	भद्रा रात्रिअन्त ५।१० से, पंचक
१६/ ६	सप्तमी (७)	शुक्र	रा.अ. ५।१८	६।०२	७।०८	भद्रा सायँ ५।१९ तक, पंचक
१७/ ६	अष्टमी (८)	शनि	रात्रि ४।४२	६।०२	७।०९	पंचक
१८/ ६	नवमी (९)	रवि	रात्रि ३।२०	६।०३	७।०९	पंचक, श्रीदादीजी नौमी व्रत
१९/ ६	दशमी (१०)	सोम	रात्रि १।१६	६।०३	७।०९	भद्रा मध्यान्ह २।२३ से रात्रि १।१६ तक, पंचक समाप्ति सायँ ५।२७
२०/ ६	एकाद. (११)	मंगल	रात्रि १०।३२	६।०३	७।०९	योगिनी एकादशी व्रत
२१/ ६	द्वादशी (१२)	बुध	सायँ ७।१७	६।०३	७।१०	प्रदोष व्रत
२२/ ६	त्रयोद. (१३)	गुरु	सायँ ३।४०	६।०३	७।१०	भद्रा सायँ ३।४० से रात्रि १।४७ तक, मासिक शिवरात्री व्रत
२३/ ६	चतुर्दशी (१४)	शुक्र	मध्या. ११।५२	६।०४	७।१०	पितृ कार्य में अमावस्या
२४/ ६	अमाव. (३०)	शनि	प्रातः ८।०२	६।०४	७।१०	देव कार्य में अमावस्या

बार : मूल- ता.११/ ६ प्रातः ८।०१ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मकर* - ता.१२/ ६ सायँ ५।२५ से ।
कुंभ - ता.१४/ ६ रात्रि ४।२५ से । *मीन* - ता.१७/ ६ मध्यान्ह १२।४५ से ।
मेष - ता.१९/ ६ सायँ ५।२७ से । *वृष* - ता.२१/ ६ सायँ ६।४८ से ।
मिथुन - ता.२३/ ६ सायँ ६।१८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

आषाढ़ शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वर्षा
राजस्थान में साढ सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में आषाढ़ शुक्लपक्ष
ता. २५ जून २०१७ से ९ जुलाई २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
क्षयः	प्रतिपदा	(१)	शनि रात्रि ४।२३	.....	.....	तिथि क्षय
२५/ ६	द्वितिया	(२)	रवि रात्रि १।०४	६।०४	७।१०	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती४५), श्री जगदीश रथ यात्रा
२६/ ६	तृतिया	(३)	सोम रात्रि १०।१५	६।०४	७।१०	सव्वाल १०
२७/ ६	चतुर्थी	(४)	मंगल सायँ ८।०४	६।०५	७।११	भद्रा प्रातः ९।०४ से सायँ ८।०४ तक
२८/ ६	पञ्चमी	(५)	बुध सायँ ६।३६	६।०५	७।११	
२९/ ६	षष्ठी	(६)	गुरु सायँ ५।५४	६।०५	७।११	स्कन्द षष्ठी, व्यतीपात प्रातः ७।०२ से रात्रिअन्त ५।४९ तक
३०/ ६	सप्तमी	(७)	शुक्र सायँ ६।००	६।०५	७।११	भद्रा सायँ ६।०० से
१/ ७	अष्टमी	(८)	शनि सायँ ६।५०	६।०६	७।११	भद्रा प्रातः ६।२० तक, जुलाई
२/ ७	नवमी	(९)	रवि रात्रि ८।१८	६।०६	७।११	शुक्लानौमी, भड़ली नवमी
३/ ७	दशमी	(१०)	सोम रात्रि १०।१६	६।०६	७।११	आशा दशमी
४/ ७	एकाद.	(११)	मंगल रात्रि १२।३२	६।०७	७।११	भद्रा मध्यान्ह ११।२३ से रात्रि १२।३२ तक, देव शयनी एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण, चतुर्मास व्रतारंभ, हरिवासर २९।२७ से
५/ ७	द्वादशी	(१२)	बुध रात्रि २।५६	६।०७	७।११	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, हरिवासर १२।१२ तक
६/ ७	त्रयोद.	(१३)	गुरु रा.अ. ५।१९	६।०७	७।११	प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतं
७/ ७	चतुर्दशी	(१४)	शुक्र दिन-रात	६।०८	७।११	
८/ ७	चतुर्दशी	(१४)	शनि प्रातः ७।३४	६।०८	७।११	भद्रा प्रातः ७।३४ से रात्रि ८।३७ तक, पूर्णिमा व्रत, बौधायन उपाकर्म
९/ ७	पूर्णिमा	(१५)	रवि दिन ९।३६	६।०८	७।११	पूर्णिमा पुण्य, व्यासपूजा, गुरु पूर्णिमा, आषाढी योग

बार : *आश्लेषा* - ता.२६/ ६ रात्रि ९।२३ से ता.२७/ ६ सायँ ७।५९ तक ।
मघा - ता.२७/ ६ सायँ ७।५९ से ता.२८/ ६ सायँ ७।१७ तक ।
ज्येष्ठा - ता. ६/ ७ प्रातः ८।२६ से ता. ७/ ७ मध्यान्ह ११।२२ तक ।
मूल - ता. ७/ ७ मध्यान्ह ११।२२ से ता. ८/ ७ मध्यान्ह २।०९ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि :
कर्क - ता.२५/ ६ सायँ ६।०१ से ।
सिंह - ता.२७/ ६ सायँ ७।५९ से । *कन्या* - ता.२९/ ६ रात्रि १।३० से ।
तुला - ता. २/ ७ दिन १०।४८ से । *वृश्चिक* - ता. ४/ ७ रात्रि १०।४३ से ।
धनु - ता. ७/ ७ मध्यान्ह ११।२२ से । *मकर* - ता. ९/ ७ रात्रि ११।२१ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

श्रावण कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९,　　ऋतु- वर्षा
राजस्थान में सावण बदि (लागत),　　महाराट्र और गुजरात में आषाढ़ कृष्णपक्ष
ता. १० जुलाई २०१७ से २३ जुलाई २०१७ तक　　सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१०/ ७	प्रतिपदा (१)	सोम	मध्या. ११।२४	६।०९	७।११	नक्त व्रतारंभ
११/ ७	द्वितिया (२)	मंगल	मध्या. १२।५४	६।०९	७।११	भद्रा रात्रि १।३१ से
१२/ ७	तृतिया (३)	बुध	मध्या. २।०३	६।०९	७।११	भद्रा मध्यान्ह २।०३ तक, पंचक प्रारम्भ दिन ९।५९, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।३७
१३/ ७	चतुर्थी (४)	गुरु	मध्या. २।४६	६।१०	७।११	पंचक
१४/ ७	पञ्चमी (५)	शुक्र	मध्या. २।५९	६।१०	७।११	पंचक, नागपंचमी (मरु.)
१५/ ७	षष्ठी (६)	शनि	मध्या. २।३९	६।१०	७।११	भद्रा मध्यान्ह २।३९ से रात्रि २।१५ तक, पंचक
१६/ ७	सप्तमी (७)	रवि	मध्या. १।४२	६।११	७।१०	पंचक समाप्ति रात्रि १२।२३
१७/ ७	अष्टमी (८)	सोम	मध्या. १२।१०	६।११	७।१०	
१८/ ७	नवमी (९)	मंगल	दिन १०।०४	६।११	७।१०	भद्रा रात्रि ८।५० से, श्रीदादीजी नौमी व्रत
१९/ ७	दशमी (१०)	बुध	प्रातः ७।२९	६।१२	७।१०	भद्रा प्रातः ७।२९ तक, कामिका एकादशी व्रत स्मार्त
क्षयः	एकाद. (११)	बुध	रात्रि ४।२९	.....	.....	तिथि क्षय
२०/ ७	द्वादशी (१२)	गुरु	रात्रि १।१४	६।१२	७।१०	कामिका एकादशी व्रत वैष्णव
२१/ ७	त्रयोद. (१३)	शुक्र	रात्रि ९।५१	६।१२	७।०९	भद्रा रात्रि ९।५१ से, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री व्रत
२२/ ७	चतुर्दशी (१४)	शनि	सायँ ६।३०	६।१३	७।०९	भद्रा प्रातः ८।१० तक
२३/ ७	अमाव. (३०)	रवि	सायँ ३।१९	६।१३	७।०९	देव-पितृ कार्य में अमावस्या, हरियाली

बार : *इस पक्ष में बार नहीं हैं ।*

चंद्र (जन्म) राशि :

कुंभ - ता.१२/ ७ दिन ९।५९ से ।
मीन - ता.१४/ ७ सायँ ६।३४ से । *मेष* - ता.१६/ ७ रात्रि १२।२३ से ।
वृष - ता.१८/ ७ रात्रि ३।१८ से । *मिथुन* - ता.२०/ ७ रात्रि ४।०९ से ।
कर्क - ता.२२/ ७ रात्रि ४।२९ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

श्रावण शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वर्षा
राजस्थान में सावण सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में श्रावण शुक्लपक्ष
ता. २४ जुलाई २०१७ से ७ अगस्त २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२४/ ७	प्रतिपदा (१)	सोम	मध्या. १२।२७	६।१३	७।०८	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती१५), व्यतीपात रात्रि१०।२२ से
२५/ ७	द्वितिया (२)	मंगल	दिन १०।०२	६।१४	७।०८	सिंधारा, व्यतीपात सायँ ७।३३ तक, जिल्काद ११
२६/ ७	तृतिया (३)	बुध	प्रातः ८।१२	६।१४	७।०८	भद्रा सायँ ७।३३ से,तीज,स्वर्णगौरी व्र., हरियाली-तीज, श्री बिहारीजी का झूला, वरद चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्र.
२७/ ७	चतुर्थी (४)	गुरु	प्रातः ७।०३	६।१४	७।०७	भद्रा प्रातः ७।०३ तक,नागपंचमी, नागदष्ट व्र., काण्वमध्यन्दिन (कात्या.) उपाकर्म
२८/ ७	पञ्चमी (५)	शुक्र	प्रातः ६।३८	६।१५	७।०७	कल्की जयंती, वर्णषष्ठी, ऋग्वेदि, हिरण्यकेशीय उपाकर्म
२९/ ७	षष्ठी (६)	शनि	प्रातः ६।५९	६।१५	७।०७	
३०/ ७	सप्तमी (७)	रवि	प्रातः ८।०३	६।१५	७।०६	भद्रा प्रातः ८।०३ से रात्रि ८।५० तक, तुलसी जयंती
३१/ ७	अष्टमी (८)	सोम	दिन ९।४५	६।१६	७।०६	
१/ ८	नवमी (९)	मंगल	मध्या.११।५४	६।१६	७।०५	शुक्लानौमी, अगस्त, तिलकपुण्यतिथि
२/ ८	दशमी (१०)	बुध	मध्या. २।१८	६।१६	७।०५	भद्रा रात्रि ३।३१ से
३/ ८	एकाद.(११)	गुरु	सायँ ४।४३	६।१७	७।०५	भद्रा सायँ ४।४३ तक, पवित्रा एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण
४/ ८	द्वादशी (१२)	शुक्र	सायँ ६।५७	६।१७	७।०४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
५/ ८	त्रयोद. (१३)	शनि	रात्रि ८।५४	६।१७	७।०४	प्रदोष व्रत
६/ ८	चतुर्दशी (१४)	रवि	रात्रि १०।२८	६।१८	७।०३	भद्रा रात्रि १०।२८ से, सूणमाण्डणा (पूरा दिन शुद्ध है)
७/ ८	पूर्णिमा (१५)	सोम	रात्रि ११।३८	६।१८	७।०३	भद्रा दिन ११।०६ तक, स्वण्डग्रास चन्द्रग्रहण, हयग्रीव जयंती, नारियल १५, पूर्णिमा व्रत और पुण्य, रक्षाबंधन (भद्रा के बाद), श्रावणी (मरु) (वेध से पहिले)

बार : *आश्लेषा* - ता.२४/ ७ प्रातः ७।४५ से ता.२४/ ७ रात्रिअन्त ६।०२ तक
मघा - ता.२४/ ७ रात्रिअन्त ६।०२ से ता.२५/ ७ रात्रि ४।५३ तक ।
ज्येष्ठा - ता. २/ ८ सायँ ३।१८ से ता. ३/ ८ सायँ ६।१६ तक ।
मूल - ता. ३/ ८ सायँ ६।१६ से ता. ४/ ८ रात्रि ९।०४ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *सिंह* - ता.२४/ ७ रात्रिअन्त ६।०२ से ।
कन्या - ता.२७/ ७ दिन १०।२३ से । *तुला* - ता.२९/ ७ सायँ ६।२२ से ।
वृश्चिक - ता.३१/ ७ रात्रिअन्त ५।३७ से । *धनु* - ता. ३/ ८ सायँ ६।१६ से ।
मकर - ता. ५/ ८ रात्रिअन्त ६।०९ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

भाद्रपद कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वर्षा
राजस्थान में भादवा बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में श्रावण कृष्णपक्ष
ता. ८ अगस्त २०१७ से २१ अगस्त २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
८/ ८	प्रतिपदा (१)	मंगल	रात्रि १२।२३	६।१८	७।०२	पंचक प्रारम्भ सायँ ४।११
९/ ८	द्वितिया (२)	बुध	रात्रि १२।४२	६।१८	७।०१	पंचक
१०/ ८	तृतिया (३)	गुरु	रात्रि १२।३५	६।१९	७।०१	भद्रा मध्यान्ह १२।४१ से रात्रि १२।३५ तक, पंचक, बूढी तीज, बहु का सिंधारा
११/ ८	चतुर्थी (४)	शुक्र	रात्रि १२।०१	६।१९	७।००	पंचक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।४२
१२/ ८	पञ्चमी (५)	शनि	रात्रि ११।०२	६।१९	७।००	पंचक समाप्ति रात्रिअन्त ५।५४, चंद्रषष्ठी (चानाछठ)
१३/ ८	षष्ठी (६)	रवि	रात्रि ९।३८	६।१९	६।५९	भद्रा रात्रि ९।३८ से, हलषष्ठी
१४/ ८	सप्तमी (७)	सोम	सायँ ७।५०	६।२०	६।५८	भद्रा प्रातः ८।४७ तक, जम्माष्टमी व्रत स्मार्त, दशाफल व्रत
१५/ ८	अष्टमी (८)	मंगल	सायँ ५।४३	६।२०	६।५८	जम्माष्टमी व्रत वैष्णव,श्री बिहारीजी की मंगला आरती, भारतीयस्वतंत्रतादिवस
१६/ ८	नवमी (९)	बुध	मध्या. ३।१९	६।२०	६।५७	भद्रा रात्रि २।०३ से,श्रीदादीजी नौमी व्रत, गोगानवमी (गुगोजी), श्री नन्दोत्सव
१७/ ८	दशमी (१०)	गुरु	मध्या.१२।४४	६।२०	६।५६	भद्रा मध्यान्ह १२।४४ तक
१८/ ८	एकाद.(११)	शुक्र	दिन १०।०२	६।२१	६।५६	अजा एकादशी व्रत, जैनपर्युषण, वत्सपूजा(बच्छबारस)
१९/ ८	द्वादशी (१२)	शनि	प्रातः ७।१८	६।२१	६।५५	भद्रा रात्रि ४।४० से, प्रदोष व्रत, व्यतीपात मध्यान्ह २।५८ से
क्षयः	त्रयोद. (१३)	शनि	रात्रि ४।४०	.....	.....	तिथि क्षय
२०/ ८	चतुर्दशी (१४)	रवि	रात्रि २।१३	६।२१	६।५४	भद्रा सायँ ३।२५ तक, मासिक शिवरात्री व्रत, व्यतीपात मध्यान्ह ११।४७ तक
२१/ ८	अमाव. (३०)	सोम	रात्रि १२।०४	६।२१	६।५४	कुशांग्रहणी,पिठोरी अमा.(मध्यदेशे पोला), देव-पितृ कार्य में अमावस्या, भादीमावस, श्रीराणीसतीजी का मेला, लोहार्गल स्नान, सोमवती अमावस्या

बार : *आश्लेषा* - ता.२०/ ८ सायँ ५।२३ से ता.२१/ ८ सायँ ३।५३ तक ।
मघा - ता.२१/ ८ सायँ ३।५३ से ।

चंद्र (जन्म) राशि : *कुंभ* - ता. ८/ ८ सायँ ४।११ से ।
मीन - ता.१०/ ८ रात्रि १२।०८ से । *मेष* - ता.१२/ ८ रात्रिअन्त ५।५४ से ।
वृष - ता.१५/ ८ दिन ९।३९ से । *मिथुन* - ता.१७/ ८ मध्यान्ह ११।५५ से ।
कर्क - ता.१९/ ८ मध्यान्ह १।३६ से । *सिंह* - ता.२१/ ८ सायँ ३।५३ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

भाद्रपद शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वर्षा

राजस्थान में भादवा सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में भाद्रपद शुक्लपक्ष

ता. २२ अगस्त २०१७ से ६ सितंबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२२/ ८	प्रतिपदा (१)	मंगल	रात्रि १०।१९	६।२२	६।५३	
२३/ ८	द्वितिया (२)	बुध	रात्रि ९।०५	६।२२	६।५२	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती४५)
२४/ ८	तृतिया (३)	गुरु	रात्रि ८।२७	६।२२	६।५२	वराह जयंती, हरितालिका व्र., जिल्हेज १२
२५/ ८	चतुर्थी (४)	शुक्र	रात्रि ८।३०	६।२२	६।५१	भद्रा प्रातः ८।२३ से रात्रि ८।३० तक, गणेश चतुर्थी (चंद्र दर्शन निषेध), चौक चानणी का सिंधारा जैन संवत्सरी, सामवेदि उपाकर्म
२६/ ८	पञ्चमी (५)	शनि	रात्रि ९।१३	६।२२	६।५०	ऋषि पंचमी
२७/ ८	षष्ठी (६)	रवि	रात्रि १०।३७	६।२३	६।४९	स्कन्द दर्शन, महालक्ष्मी व्रतारंभ
२८/ ८	सप्तमी (७)	सोम	रात्रि १२।३४	६।२३	६।४८	भद्रा रात्रि १२।३४ से, दूबड़ी सातम
२९/ ८	अष्टमी (८)	मंगल	रात्रि २।५३	६।२३	६।४८	भद्रा मध्यान्ह १।४२ तक, दधीची जयंती, श्री राधाष्टमी, ज्येष्ठा का व्रत-पूजन, गौरी आवाहन २२।५५ यावत्
३०/ ८	नवमी (९)	बुध	रात्रि ५।२१	६।२३	६।४७	शुक्लानौमी, श्री चंद्र (उदासीन संप्रदाय), गौरी पूजन २५।५५ यावत्, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्ति
३१/ ८	दशमी (१०)	गुरु	दिन-रात	६।२३	६।४६	दशावतार व्र., श्री रामदेवजी का मेला, गौरी विसर्जन २८।५० यावत्
१/ ९	दशमी (१०)	शुक्र	प्रातः ७।४२	६।२३	६।४५	भद्रा रात्रि ८।४५ से, सितंबर
२/ ९	एकाद. (११)	शनि	दिन ९।४२	६।२४	६।४४	भद्रा दिन ९।४२ तक,जलझूलनी एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण, वामन जयंती
३/ ९	द्वादशी (१२)	रवि	दिन ११।१५	६।२४	६।४४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत
४/ ९	त्रयोद. (१३)	सोम	मध्या. १२।१४	६।२४	६।४३	पंचक प्रारम्भ रात्रि ११।५२
५/ ९	चतुर्दशी (१४)	मंगल	मध्या. १२।३८	६।२४	६।४२	भद्रा मध्यान्ह १२।३८ से रात्रि १२।३८ तक, पंचक, पूर्णिमा व्रत, अनन्त चतुर्दशी, श्राद्ध प्रारम्भ, शिक्षक दिवस
६/ ९	पूर्णिमा (१५)	बुध	मध्या. १२।३०	६।२४	६।४१	पंचक,पूर्णिमापुण्य, कु.संध्यापूजा, आपस्तंभ, तैतरीय, यजुर्वेदि, अथर्ववेदि उपाकर्म

बार : *मघा-* ता.२२/ ८ मध्यान्ह २।४५ तक ।

ज्येष्ठा - ता.२९/ ८ रात्रि १०।५५ से ता.३०/ ८ रात्रि १।५५ तक ।

मूल - ता.३०/ ८ रात्रि १।५५ से ता.३१/ ८ रात्रि ४।५० तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *कन्या* - ता.२३/ ८ रात्रि ८।०१ से ।

तुला - ता.२५/ ८ रात्रि ३।०४ से । *वृश्चिक* - ता.२८/ ८ मध्यान्ह १।२६ से ।

धनु - ता.३०/ ८ रात्रि १।५५ से । *मकर* - ता. २/ ९ मध्यान्ह २।०२ से ।

कुंभ - ता. ४/ ९ रात्रि ११।५२ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह समझें ।

आश्विन कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शरद

राजस्थान में आसोज बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में भाद्रपद कृष्णपक्ष

ता. ७ सितंबर २०१७ से २० सितंबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
७/ ९	प्रतिपदा (१)	गुरु	मध्या. ११।५१	६।२५	६।४०	पंचक
८/ ९	द्वितिया (२)	शुक्र	दिन १०।४५	६।२५	६।३९	भद्रा रात्रि १०।०३ से, पंचक
९/ ९	तृतिया (३)	शनि	प्रातः ९।१६	६।२५	६।३९	भद्रा प्रातः ९।१६ तक, पंचक समाप्ति मध्यान्ह ११।४४, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।०७
१०/ ९	चतुर्थी (४)	रवि	प्रातः ७।२८	६।२५	६।३८	भरणी श्राद्ध
क्षयः	पञ्चमी (५)	रवि	रा.अ. ५।२७	.....	.....	तिथि क्षय
११/ ९	षष्ठी (६)	सोम	रात्रि ३।१७	६।२५	६।३७	भद्रा रात्रि ३।१७ से, चंद्रषष्ठी
१२/ ९	सप्तमी (७)	मंगल	रात्रि १।०३	६।२५	६।३६	भद्रा मध्यान्ह २।१० तक, श्रीमहालक्ष्मी व्र.
१३/ ९	अष्टमी (८)	बुध	रात्रि १०।४८	६।२५	६।३५	आशा भागवती व्रत (डोरा लेना), व्यतीपात रात्रि ४।०२ से
१४/ ९	नवमी (९)	गुरु	रात्रि ८।३६	६।२६	६।३४	श्रीदादीजी नौमी व्रत, व्यतीपात रात्रि १।०९ तक
१५/ ९	दशमी (१०)	शुक्र	सायँ ६।२९	६।२६	६।३३	भद्रा प्रातः ७।३२ से सायँ ६।२९ तक
१६/ ९	एकाद. (११)	शनि	सायँ ४।३१	६।२६	६।३३	इंदिरा एकादशी व्रत
१७/ ९	द्वादशी (१२)	रवि	मध्या. २।४३	६।२६	६।३२	प्रदोष व्रत, विश्वकर्मा पूजा
१८/ ९	त्रयोद. (१३)	सोम	मध्या. १।१०	६।२६	६।३१	भद्रा मध्यान्ह १।१० से रात्रि १२।३० तक, मासिक शिवरात्री व्रत
१९/ ९	चतुर्दशी (१४)	मंगल	मध्या. ११।५५	६।२६	६।३०	पितृ कार्य में अमावस्या, सर्वपितृ श्राद्ध
२०/ ९	अमाव. (३०)	बुध	दिन ११।०२	६।२७	६।२९	देव कार्य में अमावस्या, मातामह श्राद्ध

बार : *आश्लेषा* - ता.१६/ ९ रात्रि १।०४ से ता.१७/ ९ रात्रि १२।०६ तक ।

मघा - ता.१७/ ९ रात्रि १२।०६ से ता.१८/ ९ रात्रि ११।२४ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मीन* - ता. ७/ ९ प्रातः ६।५७ से ।

मेष - ता. ९/ ९ मध्यान्ह ११।४४ से । *वृष* - ता.११/ ९ मध्यान्ह ३।०१ से ।

मिथुन - ता.१३/ ९ सायँ ५।४३ से । *कर्क* - ता.१५/ ९ रात्रि ८।३३ से ।

सिंह - ता.१७/ ९ रात्रि १२।०६ से । *कन्या* - ता.१९/ ९ रात्रि ४।५९ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

आश्विन शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शरद

राजस्थान में आसोज सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में आश्विन शुक्लपक्ष

ता. २१ सितंबर २०१७ से ५ अक्टूबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२१/ ९	प्रतिपदा (१)	गुरु	दिन १०।३६	६।२७	६।२८	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०), नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, अग्रसेन जयंती, आशा भागवती डोरा खोलना
२२/ ९	द्वितिया (२)	शुक्र	दिन १०।४१	६।२७	६।२७	मोहोर्रम १ सन १४३९ हि.
२३/ ९	तृतिया (३)	शनि	दिन ११।२०	६।२७	६।२६	भद्रा रात्रि ११।५४ से
२४/ ९	चतुर्थी (४)	रवि	मध्या.१२।३५	६।२७	६।२६	भद्रा मध्यान्ह १२।३५ तक
२५/ ९	पञ्चमी (५)	सोम	मध्या. २।२३	६।२७	६।२५	उपांग ललिता व्र.
२६/ ९	षष्ठी (६)	मंगल	सायँ ४।३९	६।२८	६।२४	
२७/ ९	सप्तमी (७)	बुध	सायँ ७।०९	६।२८	६।२३	भद्रा सायँ ७।०९ से, सरस्वती आवाहनं, भद्रकाली अवतार
२८/ ९	अष्टमी (८)	गुरु	रात्रि ९।३९	६।२८	६।२२	भद्रा प्रातः ८।२५ तक, महाष्टमी, सरस्वती पूजन
२९/ ९	नवमी (९)	शुक्र	रात्रि ११।५३	६।२८	६।२१	शुक्लानौमी, शस्त्रादि पूजा, कड़ाई श्रीदुर्गाजी, बलिदान
३०/ ९	दशमी (१०)	शनि	रात्रि १।३८	६।२८	६।२०	बोद्धावतार, विजया दशमी, शमीपूजा, पट्टाभिषेक, सरस्वती विसर्जनं
१/१०	एकाद.(११)	रवि	रात्रि २।४४	६।२८	६।२०	भद्रा मध्यान्ह २।१७ से रात्रि २।४४ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण, अक्टूबर
२/१०	द्वादशी (१२)	सोम	रात्रि ३।०८	६।२९	६।१९	पंचक प्रारम्भ प्रातः ८।५०, श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, गांधी जयन्ती
३/१०	त्रयोद. (१३)	मंगल	रात्रि २।४७	६।२९	६।१८	पंचक, प्रदोष व्रत
४/१०	चतुर्दशी (१४)	बुध	रात्रि १।४६	६।२९	६।१७	भद्रा रात्रि १।४६ से, पंचक
५/१०	पूर्णिमा (१५)	गुरु	रात्रि १२।०९	६।२९	६।१६	भद्रा मध्यान्ह १।०२ तक, पंचक, पूर्णिमा व्रत और पुण्य,शरद पूर्णिमा,श्रीबीरॉ दादी जन्मोत्सवश्रीरूपाणा धाम बालाजी भीमसर मेला,कोजागरी व्र.,कार्तिक स्नान प्रा.

बार : *ज्येष्ठा* - ता.२६/ ९ प्रातः ६।५८ से ता.२७/ ९ दिन ९।५५ तक ।

मूल - ता.२७/ ९ दिन ९।५५ से ता.२८/ ९ मध्यान्ह १२।५८ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *तुला* - ता.२२/ ९ मध्यान्ह ११।५९ से ।

वृश्चिक - ता.२४/ ९ रात्रि ९।४५ से । *धनु* - ता.२७/ ९ दिन ९।५५ से ।

मकर - ता.२९/ ९ रात्रि १०।२९ से । *कुंभ* - ता. २/१० प्रातः ८।५० से ।

मीन - ता. ४/१० सायँ ३।४३ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

कार्तिक कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शरद

राजस्थान में कात्तिक बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में आश्विन कृष्णपक्ष

ता. ६ अक्टूबर २०१७ से १९ अक्टूबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
६/१०	प्रतिपदा (१)	शुक्र	रात्रि १०।०४	६।३०	६।१५	पंचक समाप्ति रात्रि ७।३०
७/१०	द्वितिया (२)	शनि	रात्रि ७।३८	६।३०	६।१५	भद्रा रात्रिअन्त ६।१९ से
८/१०	तृतिया (३)	रवि	सायँ ४।५९	६।३०	६।१४	भद्रा सायँ ४।५९ तक, करवा चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ८।३६
९/१०	चतुर्थी (४)	सोम	मध्या. २।१७	६।३०	६।१३	व्यतीपात सायँ ३।५१ से
१०/१०	पञ्चमी (५)	मंगल	मध्या. ११।३७	६।३०	६।१२	स्कन्द षष्ठी, व्यतीपात मध्यान्ह १२।३३ तक
११/१०	षष्ठी (६)	बुध	प्रातः ९।०९	६।३१	६।१२	भद्रा प्रातः ९।०९ से रात्रि ७।५९ तक
१२/१०	सप्तमी (७)	गुरु	प्रातः ६।५४	६।३१	६।११	होई आठँ (अष्टमी) चंद्रोदय २४।२०
क्षयः	अष्टमी (८)	गुरु	रात्रि ४।५७	.....	.....	तिथि क्षय
१३/१०	नवमी (९)	शुक्र	रात्रि ३।२०	६।३१	६।१०	श्रीदादीजी नौमी व्रत
१४/१०	दशमी (१०)	शनि	रात्रि २।०२	६।३१	६।०९	भद्रा मध्यान्ह २।३९ से रात्रि २।०२ तक
१५/१०	एकाद. (११)	रवि	रात्रि १।०४	६।३२	६।०९	रमा एकादशी व्रत
१६/१०	द्वादशी (१२)	सोम	रात्रि १२।२६	६।३२	६।०८	गोवत्स द्वादशी
१७/१०	त्रयोद. (१३)	मंगल	रात्रि १२।०९	६।३२	६।०७	भद्रा रात्रि १२।०९ से, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री व्रत,धनतेरस, धन्वन्तरी जयंती, यम के लिए दीपदान, गोत्रिरात्र व्र., आकाश दीपारंभ
१८/१०	चतुर्दशी (१४)	बुध	रात्रि १२।१३	६।३३	६।०६	भद्रा मध्यान्ह १२।०८ तक, छोटी दीपावली दीपदान
१९/१०	अमाव. (३०)	गुरु	रात्रि १२।४२	६।३३	६।०६	देव-पितृ कार्य में अमावस्या, महालक्ष्मी पूजा, कुबेर पू.

बार : *आश्लेषा* - ता.१४/१० प्रातः ६।५१ से ता.१४/१० रात्रिअन्त ६।१८ तक

मघा - ता.१४/१० रात्रिअन्त ६।१८ से ता.१५/१० रात्रिअन्त ६।०५ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मेष* - ता. ६/१० रात्रि ७।३० से ।

वृष - ता. ८/१० रात्रि ९।२९ से । *मिथुन* - ता.१०/१० रात्रि ११।१४ से ।

कर्क - ता.१२/१० रात्रि १।५९ से । *सिंह* - ता.१४/१० रात्रिअन्त ६।१८ से ।

कन्या - ता.१७/१० मध्यान्ह १२।१५ से । *तुला* - ता.१९/१० रात्रि ७।५८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

कार्तिक शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शरद

राजस्थान में कात्तिक सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में कार्तिक शुक्लपक्ष

ता. २० अक्टूबर २०१७ से ४ नवंबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२०/१०	प्रतिपदा (१)	शुक्र	रात्रि १।३६	६।३३	६।०५	बलीपूजा,गोवर्धन पूजा,अन्नकूट, गोक्रीडा, गुजरातियों का नया संवत् २०७४ प्रारंभ
२१/१०	द्वितिया (२)	शनि	रात्रि २।५८	६।३४	६।०४	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती४५),भैयादूज, यम २, यमुना स्नानं,कलम दवात पू.,शहीद दिवस
२२/१०	तृतिया (३)	रवि	रात्रि ४।४९	६।३४	६।०४	सफर २
२३/१०	चतुर्थी (४)	सोम	दिन-रात	६।३४	६।०३	भद्रा सायँ ५।५३ से, दूर्वागणपति व्र.
२४/१०	चतुर्थी (४)	मंगल	प्रातः ७।०३	६।३५	६।०३	भद्रा प्रातः ७।०३ तक
२५/१०	पञ्चमी (५)	बुध	दिन ९।३६	६।३५	६।०२	सौभाग्य (पाण्डव) पंचमी
२६/१०	षष्ठी (६)	गुरु	मध्या.१२।१५	६।३५	६।०१	
२७/१०	सप्तमी (७)	शुक्र	मध्या. २।४५	६।३६	६।०१	भद्रा मध्यान्ह २।४५ से रात्रि ३।५२ तक
२८/१०	अष्टमी (८)	शनि	सायँ ४।५१	६।३६	६।००	गोपाष्टमी
२९/१०	नवमी (९)	रवि	सायँ ६।२०	६।३६	६।००	पंचक प्रारम्भ सायँ ५।५७, शुक्लानौमी, कुष्माण्ड (आंवला) नवमी
३०/१०	दशमी (१०)	सोम	रात्रि ७।०३	६।३७	५।५९	पंचक
३१/१०	एकाद.(११)	मंगल	सायँ ६।५५	६।३७	५।५९	भद्रा प्रातः ७।०५ से सायँ ६।५५ तक, पंचक,प्रबोधिनी एकादशी व्रत,तुलसी विवाह, भीष्म पंचक प्रा., चतुर्मास व्रतसमाप्ति, देवोत्थापन, श्रीश्यामबाबा जागरण
१/११	द्वादशी (१२)	बुध	सायँ ५।५६	६।३८	५।५८	पंचक, श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत, नवंबर
२/११	त्रयोद. (१३)	गुरु	सायँ ४।११	६।३८	५।५८	पंचक समाप्ति रात्रि ५।२८,वैकुण्ठ १४
३/११	चतुर्दशी (१४)	शुक्र	मध्या. १।४७	६।३९	५।५७	भद्रा मध्यान्ह १।४७ से रात्रि १२।२४ तक, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुरोत्सव, पुष्कर यात्रा
४/११	पूर्णिमा (१५)	शनि	दिन १०।५३	६।३९	५।५७	पूर्णिमा पुण्य, नानक जयंती, भीष्म पंचक समाप्ति, कार्तिक स्नान पूर्ति, व्यतीपात प्रातः ७।१० से रात्रि ३।२३ तक

बार : *ज्येष्ठा* - ता.२३/१० मध्यान्ह २।४९ से ता.२४/१० सायँ ५।४१ तक ।

मूल - ता.२४/१० सायँ ५।४१ से ता.२५/१० रात्रि ८।४६ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *वृश्चिक* - ता.२१/१० रात्रिअन्त ५।४६ से ।

धनु - ता.२४/१० सायँ ५।४१ से । *मकर* - ता.२६/१० रात्रिअन्त ६।३५ से ।

कुंभ - ता.२९/१० सायँ ५।५७ से । *मीन* - ता.३१/१० रात्रि १।४२ से ।

मेष - ता. २/११ रात्रि ५।२८ से । *वृष* - ता. ४/११ रात्रिअन्त ६।२७ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- हेमन्त

राजस्थान में मंगसिर बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में कार्तिक कृष्णपक्ष

ता. ५ नवंबर २०१७ से १८ नवंबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
५/११	प्रतिपदा (१)	रवि	प्रातः ७।४०	६।४०	५।५६	
क्षयः	द्वितिया (२)	रवि	रात्रि ४।१८	.....	.....	तिथि क्षय
६/११	तृतिया (३)	सोम	रात्रि १२।५९	६।४०	५।५६	भद्रा मध्यान्ह २।३७ से रात्रि १२।५९ तक, सौभाग्य सुंदरी व्र.
७/११	चतुर्थी (४)	मंगल	रात्रि ९।५१	६।४०	५।५६	अंगारकी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।१२
८/११	पञ्चमी (५)	बुध	रात्रि ७।०३	६।४१	५।५५	
९/११	षष्ठी (६)	गुरु	सायँ ४।४१	६।४१	५।५५	भद्रा सायँ ४।४१ से रात्रि ३।४१ तक
१०/११	सप्तमी (७)	शुक्र	मध्या. २।४९	६।४२	५।५५	कालभैरवाष्टमी
११/११	अष्टमी (८)	शनि	मध्या. १।३०	६।४२	५।५४	
१२/११	नवमी (९)	रवि	मध्या.१२।४१	६।४३	५।५४	भद्रा रात्रि १२।२९ से, श्रीदादीजी नौमी व्रत, राणी सतीजी जन्म महोत्सव मेला
१३/११	दशमी (१०)	सोम	मध्या.१२।२४	६।४४	५।५४	भद्रा मध्यान्ह १२।२४ तक
१४/११	एकाद. (११)	मंगल	मध्या.१२।३४	६।४४	५।५४	उत्त्पत्ति एकादशी व्रत, वैतरणी व्र., नेहरुजयन्ती (बालदिवस)
१५/११	द्वादशी (१२)	बुध	मध्या. १।०९	६।४५	५।५३	प्रदोष व्रत
१६/११	त्रयोद. (१३)	गुरु	मध्या. २।०८	६।४५	५।५३	भद्रा मध्यान्ह २।०८ से रात्रि २।४६ तक, मासिक शिवरात्री व्रत, आकाशदीप समाप्ति
१७/११	चतुर्दशी (१४)	शुक्र	मध्या. ३।३०	६।४६	५।५३	
१८/११	अमाव. (३०)	शनि	सायँ ५।१२	६।४६	५।५३	देव-पितृ कार्य में अमावस्या, गौरीतपो व्र.

बार : *आश्लेषा* - ता.१०/११ मध्यान्ह १२।२३ से ता.११/११ दिन ११।४१ तक ।

मघा - ता.११/११ दिन ११।४१ से ता.१२/११ दिन ११।३० तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मिथुन* - ता. ६/११ रात्रिअन्त ६।३९ से ।

कर्क - ता. ९/११ प्रातः ८।०० से । *सिंह* - ता.११/११ दिन ११।४१ से ।

कन्या - ता.१३/११ सायँ ५।५७ से । *तुला* - ता.१५/११ रात्रि २।२६ से ।

वृश्चिक - ता.१८/११ मध्यान्ह १२।४८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- हेमन्त

राजस्थान में मंगसिर सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

ता. १९ नवंबर २०१७ से ३ दिसंबर २०१७ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१९/११	प्रतिपदा (१)	रवि	रात्रि ७।१५	६।४७	५।५३	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२०/११	द्वितिया (२)	सोम	रात्रि ९।३५	६।४७	५।५३	रविलावल ३
२१/११	तृतिया (३)	मंगल	रात्रि १२।१०	६।४८	५।५३	रंभा व्रत
२२/११	चतुर्थी (४)	बुध	रात्रि २।५२	६।४९	५।५३	भद्रा मध्यान्ह १।३० से रात्रि २।५२ तक
२३/११	पञ्चमी (५)	गुरु	रात्रि ५।३१	६।४९	५।५२	
२४/११	षष्ठी (६)	शुक्र	दिन-रात	६।५०	५।५२	स्कन्द (महाराष्ट्र में चंपा) षष्ठी व्रत
२५/११	षष्ठी (६)	शनि	प्रातः ७।५५	६।५०	५।५२	पंचक प्रारम्भ रात्रि १।५७
२६/११	सप्तमी (७)	रवि	प्रातः ९।४९	६।५१	५।५२	भद्रा प्रातः ९।४९ से रात्रि १०।३१ तक, पंचक
२७/११	अष्टमी (८)	सोम	दिन ११।०१	६।५२	५।५३	पंचक
२८/११	नवमी (९)	मंगल	दिन ११।२३	६।५२	५।५३	पंचक, शुक्लानौमी
२९/११	दशमी (१०)	बुध	दिन १०।५१	६।५३	५।५३	भद्रा रात्रि १०।१५ से, पंचक, व्यतीपात रात्रि १०।३४ से
३०/११	एकाद. (११)	गुरु	प्रातः ९।२६	६।५३	५।५३	भद्रा प्रातः ९।२६ तक, पंचक समाप्ति सायँ ४।११, मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण, गीता जयंती, व्यतीपात रात्रि ७।५३ तक
१/१२	द्वादशी (१२)	शुक्र	प्रातः ७।१३	६।५४	५।५३	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी व्र., दिसंबर
क्षयः	त्रयोद. (१३)	शुक्र	रात्रि ४।२०	.....	.....	तिथि क्षय
२/१२	चतुर्दशी (१४)	शनि	रात्रि १२।५८	६।५५	५।५३	भद्रा रात्रि १२।५८ से
३/१२	पूर्णिमा (१५)	रवि	रात्रि ९।१७	६।५५	५।५३	भद्रा दिन ११।०९ तक, श्री दत्त जयंती, पूर्णिमा व्रत और पुण्य, (बत्तीसी पूर्णिमा)

बार : *ज्येष्ठा* - ता.१९/११ रात्रि ९।५५ से ता.२०/११ रात्रि १२।४५ तक ।

मूल - ता.२०/११ रात्रि १२।४५ से ता.२१/११ रात्रि ३।४७ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *धनु* - ता.२०/११ रात्रि १२।४५ से ।

मकर - ता.२३/११ मध्यान्ह १।४२ से । *कुंभ* - ता.२५/११ रात्रि १।५७ से ।

मीन - ता.२८/११ दिन ११।१३ से । *मेष* - ता.३०/११ सायँ ४।११ से ।

वृष - ता. २/१२ सायँ ५।२६ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

पोष कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९,　　ऋतु- हेमन्त
राजस्थान में पो बदि (लागत),　　महाराट्र और गुजरात में मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष
ता. ४ दिसंबर २०१७ से १८ दिसंबर २०१७ तक　　सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
४/१२	प्रतिपदा (१)	सोम	सायँ ५।३०	६।५६	५।५३	नौ सेना दिवस
५/१२	द्वितिया (२)	मंगल	मध्या. १।४८	६।५६	५।५४	भद्रा रात्रि १२।०१ से
६/१२	तृतिया (३)	बुध	दिन १०।२०	६।५७	५।५४	भद्रा दिन १०।२० तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।००
७/१२	चतुर्थी (४)	गुरु	प्रातः ७।१८	६।५८	५।५४	
क्षयः	पञ्चमी (५)	गुरु	रात्रि ४।४७	.....	.....	तिथि क्षय
८/१२	षष्ठी (६)	शुक्र	रात्रि २।५४	६।५८	५।५४	भद्रा रात्रि २।५४ से
९/१२	सप्तमी (७)	शनि	रात्रि १।४२	६।५९	५।५५	भद्रा मध्यान्ह २।१३ तक
१०/१२	अष्टमी (८)	रवि	रात्रि १।१२	७।००	५।५५	
११/१२	नवमी (९)	सोम	रात्रि १।२१	७।००	५।५५	श्रीदादीजी नौमी व्रत
१२/१२	दशमी (१०)	मंगल	रात्रि २।०६	७।०१	५।५६	भद्रा मध्यान्ह १।३९ से रात्रि २।०६ तक
१३/१२	एकाद. (११)	बुध	रात्रि ३।२४	७।०१	५।५६	सफला एकादशी व्रत
१४/१२	द्वादशी (१२)	गुरु	रात्रि ५।०८	७।०२	५।५६	सुरुप द्वादशी
१५/१२	त्रयोद. (१३)	शुक्र	दिन-रात	७।०२	५।५७	प्रदोष व्रत, मलमास प्रारम्भ
१६/१२	त्रयोद. (१३)	शनि	प्रातः ७।१२	७।०३	५।५७	भद्रा प्रातः ७।१२ से रात्रि ८।२० तक, मासिक शिवरात्री व्रत
१७/१२	चतुर्दशी (१४)	रवि	प्रातः ९।३१	७।०४	५।५८	पितृ कार्य में अमावस्या
१८/१२	अमाव. (३०)	सोम	दिन १२।०२	७।०४	५।५८	देव कार्य में अमावस्या, सोमवती अमावस्या

बार : *आश्लेषा* - ता. ७/१२ रात्रि ७।५५ से ता. ८/१२ सायँ ६।२८ तक ।
मघा - ता. ८/१२ सायँ ६।२८ से ता. ९/१२ सायँ ५।४० तक ।
ज्येष्ठा - ता.१६/१२ रात्रि ४।१२ से ता.१८/१२ प्रातः ७।०६ तक ।
मूल - ता.१८/१२ प्रातः ७।०६ से ।

चंद्र (जन्म) राशि :
कर्क - ता. ६/१२ सायँ ४।३२ से । *सिंह* - ता. ८/१२ सायँ ६।२८ से ।
कन्या - ता.१०/१२ रात्रि ११।३८ से । *तुला* - ता.१३/१२ प्रातः ८।०१ से ।
वृश्चिक - ता.१५/१२ सायँ ६।५१ से । *धनु* - ता.१८/१२ प्रातः ७।०६ से ।
मिथुन - ता. ४/१२ सायँ ४।४९ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

पोष शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- हेमन्त
राजस्थान में पो सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में पोष शुक्लपक्ष
ता. १९ दिसंबर २०१७ से २ जनवरी २०१८ तक सूर्य - दक्षिणायन

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१९/१२	प्रतिपदा (१)	मंगल	मध्या. २।३८	७।०५	५।५९	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२०/१२	द्वितिया (२)	बुध	सायँ ५।१८	७।०५	५।५९	रविलास्वर ४
२१/१२	तृतिया (३)	गुरु	रात्रि ७।५४	७।०६	६।००	
२२/१२	चतुर्थी (४)	शुक्र	रात्रि १०।१९	७।०६	६।००	भद्रा प्रातः ९।०९ से रात्रि १०।१९ तक
२३/१२	पञ्चमी (५)	शनि	रात्रि १२।२२	७।०७	६।०१	पंचक प्रारम्भ प्रातः ८।२५
२४/१२	षष्ठी (६)	रवि	रात्रि १।५४	७।०७	६।०१	पंचक
२५/१२	सप्तमी (७)	सोम	रात्रि २।४३	७।०८	६।०२	भद्रा रात्रि २।४३ से, पंचक, व्यतीपात प्रातः ७।२१ से रात्रिअन्त ६।४२ तक, बडादिन
२६/१२	अष्टमी (८)	मंगल	रात्रि २।४५	७।०८	६।०२	भद्रा मध्यान्ह २।५० तक, पंचक, शांकभरी यात्रा
२७/१२	नवमी (९)	बुध	रात्रि १।५६	७।०८	६।०३	पंचक समाप्ति रात्रि १।३६, शुक्लानौमी
२८/१२	दशमी (१०)	गुरु	रात्रि १२।१७	७।०९	६।०३	
२९/१२	एकाद. (११)	शुक्र	रात्रि ९।५४	७।०९	६।०४	भद्रा दिन ११।११ से रात्रि ९।५४ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा जागरण
३०/१२	द्वादशी (१२)	शनि	सायँ ६।५४	७।१०	६।०४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
३१/१२	त्रयोद. (१३)	रवि	मध्या. ३।२७	७।१०	६।०५	प्रदोष व्रत
१/ १	चतुर्दशी (१४)	सोम	दिन ११।४३	७।१०	६।०६	भद्रा दिन ११।४३ से रात्रि ९।४९ तक, पूर्णिमा व्रत, शाकंभरी जयंती, जनवरी सन २०१८ ई.
२/ १	पूर्णिमा (१५)	मंगल	प्रातः ७।५४	७।११	६।०६	पूर्णिमा पुण्य, माघ स्नानारंभ

बार : मूल- ता.१९/१२ दिन १०।०७ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मकर* - ता.२०/१२ रात्रि ७।५७ से ।
कुंभ - ता.२३/१२ प्रातः ८।२५ से । *मीन* - ता.२५/१२ सायँ ६।५० से ।
मेष - ता.२७/१२ रात्रि १।३६ से । *वृष* - ता.२९/१२ रात्रि ४।२२ से ।
मिथुन - ता.३१/१२ रात्रि ४।२२ से । *कर्क* - ता. २/ १ रात्रि ३।३२ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

माघ कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शिशिर
राजस्थान में मा बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में पोष कृष्णपक्ष
ता. ३ जनवरी २०१८ से १७ जनवरी २०१८ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
क्षयः	प्रतिपदा	(१)	मंगल रात्रि	४।१०	.....	..... तिथि क्षय
३/ १	द्वितिया	(२)	बुध रात्रि १२।४१	७।११	६।०७	
४/ १	तृतिया	(३)	गुरु रात्रि ९।३६	७।११	६।०७	भद्रा दिन ११।०५ से रात्रि ९।३६ तक, सौभाग्य सुन्दरी व्र., संकट हरगणपति व्र.
५/ १	चतुर्थी	(४)	शुक्र सायँ ७।०५	७।१२	६।०८	माही (तिलकुटी) चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।४७
६/ १	पञ्चमी	(५)	शनि सायँ ५।१३	७।१२	६।०९	
७/ १	षष्ठी	(६)	रवि मध्या. ४।०६	७।१२	६।०९	भद्रा मध्यान्ह ४।०६ से रात्रि ३।५१ तक
८/ १	सप्तमी	(७)	सोम मध्या. ३।४६	७।१२	६।१०	स्वामीविवेकानन्द जयंती
९/ १	अष्टमी	(८)	मंगल सायँ ४।१४	७।१३	६।११	
१०/ १	नवमी	(९)	बुध सायँ ५।२५	७।१३	६।११	भद्रा रात्रिअन्त ६।१४ से, श्रीदादीजी नौमी व्रत
११/ १	दशमी	(१०)	गुरु सायँ ७।११	७।१३	६।१२	भद्रा सायँ ७।११ तक
१२/ १	एकाद.	(११)	शुक्र रात्रि ९।२५	७।१३	६।१३	षट्तिला एकादशी व्रत
१३/ १	द्वादशी	(१२)	शनि रात्रि ११।५६	७।१३	६।१३	तिल द्वादशी
१४/ १	त्रयोद.	(१३)	रवि रात्रि २।३५	७।१३	६।१४	भद्रा रात्रि २।३५ से, प्रदोष व्रत, मलमास समाप्त, मकर सक्रान्ति मध्यान्ह १।१९
१५/ १	चतुर्दशी	(१४)	सोम रात्रि ५।१३	७।१३	६।१४	भद्रा मध्यान्ह ३।५५ तक, मासिक शिवरात्री व्रत
१६/ १	अमाव.	(३०)	मंगल दिन-रात	७।१३	६।१५	पितृ कार्य में अमावस्या, मौनी अमा.
१७/ १	अमाव.	(३०)	बुध प्रातः ७।४६	७।१३	६।१६	देव कार्य में अमावस्या

बार : *आश्लेषा* - ता. ३/ १ रात्रि ६।०९ से ता. ४/ १ रात्रि ३।५६ तक ।
मघा - ता. ४/ १ रात्रि ३।५६ से ता. ५/ १ रात्रि २।१८ तक ।
ज्येष्ठा - ता.१३/ १ दिन १०।१५ से ता.१४/ १ मध्यान्ह १।१५ तक ।
मूल - ता.१४/ १ मध्यान्ह १।१५ से ता.१५/ १ सायँ ४।१९ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि :
कन्या - ता. ७/ १ प्रातः ७।१३ से । *तुला* - ता. ९/ १ मध्यान्ह २।१७ से ।
वृश्चिक - ता.११/ १ रात्रि १२।४६ से । *धनु* - ता.१४/ १ मध्यान्ह १।१५ से ।
मकर - ता.१६/ १ रात्रि २।०५ से । *सिंह* - ता. ४/ १ रात्रि ३।५६ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

माघ शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शिशिर
राजस्थान में मा सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में माघ शुक्लपक्ष
ता. १८ जनवरी २०१८ से ३१ जनवरी २०१८ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१८/ १	प्रतिपदा (१)	गुरु	प्रातः १०।०९	७।१४	६।१६	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०), श्री वल्लभ जयंती
१९/ १	द्वितिया (२)	शुक्र	मध्या.१२।१९	७।१४	६।१७	पंचक प्रारम्भ मध्यान्ह २।१२,व्यतीपात दिन १०।५५ से, जमादिलावल ५
२०/ १	तृतिया (३)	शनि	मध्या. २।०९	७।१३	६।१८	भद्रा रात्रि २।५५ से, पंचक, व्यतीपात दिन ११।१२ तक
२१/ १	चतुर्थी (४)	रवि	मध्या. ३।३४	७।१३	६।१८	भद्रा मध्यान्ह ३।३४ तक, पंचक
२२/ १	पञ्चमी (५)	सोम	सायँ ४।२७	७।१३	६।१९	पंचक, वसन्त पंचमी
२३/ १	षष्ठी (६)	मंगल	सायँ ४।४४	७।१३	६।१९	पंचक, नेताजी जयन्ती
२४/ १	सप्तमी (७)	बुध	सायँ ४।२१	७।१३	६।२०	भद्रा सायँ ४।२१ से रात्रि ३।५४ तक, पंचक समाप्ति प्रातः ८।३५, पुत्र ७, रथ सप्तमी
२५/ १	अष्टमी (८)	गुरु	मध्या. ३।१७	७।१३	६।२१	भीष्माष्टमी
२६/ १	नवमी (९)	शुक्र	मध्या. १।३४	७।१३	६।२१	शुक्लानौमी, गणतन्त्र दिवस
२७/ १	दशमी (१०)	शनि	दिन ११।१५	७।१३	६।२२	भद्रा रात्रि ९।५४ से, श्रीश्यामबाबा जागरण
२८/ १	एकाद.(११)	रवि	प्रातः ८।२७	७।१३	६।२२	भद्रा प्रातः ८।२७ तक, जया एकादशी व्रत, श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, भीष्मद्वादशी
क्षयः	द्वादशी (१२)	रवि	रात्रि ५।१७	.....	.....	तिथि क्षय
२९/ १	त्रयोद. (१३)	सोम	रात्रि १।५३	७।१२	६।२३	प्रदोष व्रत
३०/ १	चतुर्दशी (१४)	मंगल	रात्रि १०।२४	७।१२	६।२४	भद्रा रात्रि १०।२४ से, गांधीजी पुण्य तिथि
३१/ १	पूर्णिमा (१५)	बुध	सायँ ६।५९	७।१२	६।२४	भद्रा प्रातः ८।४० तक, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण, पूर्णिमा व्रत और पुण्य, माघ स्नान पूर्त्ति

बार : *आश्लेषा* - ता.३१/ १ सायँ ५।३५ से ।

चंद्र (जन्म) राशि : *कुंभ* - ता.१९/ १ मध्यान्ह २।१२ से ।
मीन - ता.२१/ १ रात्रि १२।४४ से । *मेष* - ता.२४/ १ प्रातः ८।३५ से ।
वृष - ता.२६/ १ मध्यान्ह १।११ से । *मिथुन* - ता.२८/ १ मध्यान्ह २।५३ से ।
कर्क - ता.३०/ १ मध्यान्ह २।५८ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

फाल्गुन कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शिशिर
राजस्थान में फागण बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में माघ कृष्णपक्ष
ता. १ फरवरी २०१८ से १५ फरवरी २०१८ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१/ २	प्रतिपदा (१)	गुरु	मध्या. ३।४७	७।१२	६।२५	फरवरी
२/ २	द्वितिया (२)	शुक्र	मध्या.१२।५८	७।११	६।२५	भद्रा रात्रि ११।४५ से
३/ २	तृतिया (३)	शनि	दिन १०।४०	७।११	६।२६	भद्रा दिन १०।४० तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।२६
४/ २	चतुर्थी (४)	रवि	प्रातः ९।०१	७।११	६।२६	
५/ २	पञ्चमी (५)	सोम	प्रातः ८।०७	७।१०	६।२७	
६/ २	षष्ठी (६)	मंगल	प्रातः ८।०१	७।१०	६।२७	भद्रा प्रातः ८।०१ से रात्रि ८।१७ तक
७/ २	सप्तमी (७)	बुध	प्रातः ८।४५	७।१०	६।२८	
८/ २	अष्टमी (८)	गुरु	दिन १०।१३	७।०९	६।२८	
९/ २	नवमी (९)	शुक्र	मध्या.१२।१९	७।०९	६।२९	भद्रा रात्रि १।३२ से, श्रीदादीजी नौमी व्रत, रामदास नवमी
१०/ २	दशमी (१०)	शनि	मध्या. २।४९	७।०८	६।२९	भद्रा मध्यान्ह २।४९ तक
११/ २	एकाद.(११)	रवि	सायँ ५।३१	७।०८	६।३०	विजया एकादशी व्रत
१२/ २	द्वादशी(१२)	सोम	रात्रि ८।१०	७।०७	६।३०	
१३/ २	त्रयोद. (१३)	मंगल	रात्रि १०।३७	७।०७	६।३१	भद्रा रात्रि १०।३७ से, प्रदोष व्रत, महा शिवरात्री व्रत, व्यतीपात मध्यान्ह २।२९ से
१४/ २	चतुर्दशी(१४)	बुध	रात्रि १२।४७	७।०६	६।३१	भद्रा दिन ११।४४ तक, व्यतीपात मध्यान्ह ३।०८ तक
१५/ २	अमाव. (३०)	गुरु	रात्रि २।३४	७।०६	६।३२	पंचक प्रारम्भ रात्रि ८।३५, देव-पितृ कार्य में अमावस्या

बार : *आश्लेषा-* ता. १/ २ मध्यान्ह ३।०७ तक ।
मघा - ता. १/ २ मध्यान्ह ३।०७ से ता. २/ २ मध्यान्ह १।०१ तक ।
ज्येष्ठा - ता. ९/ २ सायँ ४।५५ से ता.१०/ २ रात्रि ७।५४ तक ।
मूल - ता.१०/ २ रात्रि ७।५४ से ता.११/ २ रात्रि ११।०२ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि :
सिंह - ता. १/ २ मध्यान्ह ३।०७ से ।
कन्या - ता. ३/ २ सायँ ५।०७ से । *तुला* - ता. ५/ २ रात्रि १०।२७ से ।
वृश्चिक - ता. ८/ २ प्रातः ७।४२ से । *धनु* - ता.१०/ २ रात्रि ७।५४ से ।
मकर - ता.१३/ २ प्रातः ८।४९ से । *कुंभ* - ता.१५/ २ रात्रि ८।३५ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

फाल्गुन शुक्लपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- शिशिर

राजस्थान में फागण सुदि (उतरत), महाराट्र और गुजरात में फाल्गुन शुक्लपक्ष

ता. १६ फरवरी २०१८ से १ मार्च २०१८ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
१६/ २	प्रतिपदा (१)	शुक्र	रात्रि ३।५६	७।०५	६।३२	पंचक
१७/ २	द्वितिया (२)	शनि	रात्रि ४।५२	७।०५	६।३२	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०), पंचक, फुलरिया दूज, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती
१८/ २	तृतिया (३)	रवि	रात्रि ५।२१	७।०४	६।३३	पंचक, जमादिलाख्वर ६
१९/ २	चतुर्थी (४)	सोम	रात्रि ५।२१	७।०४	६।३३	भद्रा सायँ ५।२५ से रात्रि ५।२१ तक, पंचक
२०/ २	पञ्चमी (५)	मंगल	रात्रि ४।५३	७।०३	६।३४	पंचक समाप्ति मध्यान्ह २।०६, याज्ञवल्क्य जयंती
२१/ २	षष्ठी (६)	बुध	रात्रि ३।५७	७।०३	६।३४	
२२/ २	सप्तमी (७)	गुरु	रात्रि २।३४	७।०२	६।३४	भद्रा रात्रि २।३४ से
२३/ २	अष्टमी (८)	शुक्र	रात्रि १२।४७	७।०१	६।३५	भद्रा मध्यान्ह १।४३ तक, होलाष्टक
२४/ २	नवमी (९)	शनि	रात्रि १०।३८	७।०१	६।३५	शुक्लानौमी
२५/ २	दशमी (१०)	रवि	रात्रि ८।११	७।००	६।३६	भद्रा रात्रिअन्त ६।५२ से
२६/ २	एकाद.(११)	सोम	सायँ ५।३१	६।५९	६।३६	भद्रा सायँ ५।३१ तक, आमलकी एकादशी व्रत, बिड़कुला-ढाल थापणा भद्रा के बाद, श्रीश्यामबाबा जागरण
२७/ २	द्वादशी (१२)	मंगल	मध्या. २।४१	६।५९	६।३६	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्, प्रदोष व्रत, श्री स्वाटुश्यामजी मेला
२८/ २	त्रयोद. (१३)	बुध	दिन ११।४९	६।५८	६।३७	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
१/ ३	चतुर्दशी (१४)	गुरु	प्रातः ९।०२	६।५७	६।३७	भद्रा प्रातः ९।०२ से रात्रि ७।४२ तक, पूर्णिमा व्रत और पुण्य, जेलपोणी भद्रा के पहिले, होलिका दहन भद्रा के बाद, मार्च
क्षयः	पूर्णिमा (१५)	गुरु	रा.अ. ६।२६	.....	.....	तिथि क्षय

बार : *आश्लेषा* - ता.२७/ २ रात्रि ३।५१ से ता.२८/ २ रात्रि १।४६ तक ।

मघा - ता.२८/ २ रात्रि १।४६ से ता. १/ ३ रात्रि ११।४९ तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *मीन* - ता.१७/ २ रात्रिअन्त ६।२८ से ।

मेष - ता.२०/ २ मध्यान्ह २।०६ से । *वृष* - ता.२२/ २ सायँ ७।२६ से ।

मिथुन - ता.२४/ २ रात्रि १०।४३ से । *कर्क* - ता.२६/ २ रात्रि १२।३० से ।

सिंह - ता.२८/ २ रात्रि १।४६ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

चैत्र कृष्णपक्ष संवत् २०७४, शाकः १९३९, ऋतु- वसंत
राजस्थान में चैत बदि (लागत), महाराट्र और गुजरात में फाल्गुन कृष्णपक्ष
ता. २ मार्च २०१८ से १७ मार्च २०१८ तक सूर्य - उत्तरायण

तारीख	तिथि	वार	तिथिसमाप्ति समय घं.मि.	सूर्योद. घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	व्रत - उत्सव (स्टैंडर्ड घंटा-मिनट)
२/ ३	प्रतिपदा (१)	शुक्र	रात्रि ४।१०	६।५७	६।३७	वसन्त १, छारेंडी, सांपदा का डोरा लेना, गणगौर पूजा आरम्भ
३/ ३	द्वितिया (२)	शनि	रात्रि २।२२	६।५६	६।३७	
४/ ३	तृतिया (३)	रवि	रात्रि १।१०	६।५५	६।३८	भद्रा मध्यान्ह १।४१ से रात्रि १।१० तक
५/ ३	चतुर्थी (४)	सोम	रात्रि १२।४०	६।५४	६।३८	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि ९।५६
६/ ३	पञ्चमी (५)	मंगल	रात्रि १२।५७	६।५४	६।३८	रंग पंचमी
७/ ३	षष्ठी (६)	बुध	रात्रि २।००	६।५३	६।३९	भद्रा रात्रि २।०० से
८/ ३	सप्तमी (७)	गुरु	रात्रि ३।४७	६।५२	६।३९	भद्रा मध्यान्ह २।४९ तक, विश्व महिला दिवस
९/ ३	अष्टमी (८)	शुक्र	रा.अ. ६।०५	६।५१	६।३९	शीतला (बास्योड़ो) पूजन
१०/ ३	नवमी (९)	शनि	दिन-रात	६।५१	६।३९	व्यतीपात सायँ ६।४० से
११/ ३	नवमी (९)	रवि	प्रातः ८।४२	६।५०	६।४०	भद्रा रात्रि १०।०२ से, श्रीदादीजी नौमी व्रत, व्यतीपात सायँ ७।३९ तक
१२/ ३	दशमी (१०)	सोम	दिन ११।२१	६।४९	६।४०	भद्रा दिन ११।२१ तक
१३/ ३	एकाद. (११)	मंगल	मध्या. १।४७	६।४८	६।४०	पापमोचनी एकादशी व्रत, दादू दयाल जयन्ती
१४/ ३	द्वादशी (१२)	बुध	सायँ ३।४९	६।४७	६।४१	पंचक प्रारम्भ रात्रि ४।१२, प्रदोष व्रत
१५/ ३	त्रयोद. (१३)	गुरु	सायँ ५।२०	६।४७	६।४१	भद्रा सायँ ५।२० से रात्रिअन्त ५।५४ तक, पंचक, रंग तेरस, मासिक शिवरात्री व्रत, गंगास्नान, वारुणी योग १७।१० से १७।२०
१६/ ३	चतुर्दशी (१४)	शुक्र	सायँ ६।१९	६।४६	६।४१	पंचक
१७/ ३	अमाव. (३०)	शनि	सायँ ६।४३	६।४५	६।४१	पंचक, देव-पितृ कार्य में अमावस्या, विश्व विकलांग दिवस

बार : *ज्येष्ठा* - ता. ८/ ३ रात्रि १२।४२ से ता. ९/ ३ रात्रि ३।२७ तक ।
मूल - ता. ९/ ३ रात्रि ३।२७ से ता.१०/ ३ रात्रिअन्त ६।३० तक ।

चंद्र (जन्म) राशि : *कन्या* - ता. २/ ३ रात्रि ३।४८ से ।
तुला - ता. ५/ ३ प्रातः ८।१० से । *वृश्चिक* - ता. ७/ ३ सायँ ४।०४ से ।
धनु - ता. ९/ ३ रात्रि ३।२७ से । *मकर* - ता.१२/ ३ सायँ ४।२२ से ।
कुंभ - ता.१४/ ३ रात्रि ४।१२ से । *मीन* - ता.१७/ ३ मध्यान्ह १।२९ से ।

नोट - मध्या. को मध्यान्ह और रा.अ. को रात्रिअन्त समझें ।

संवत् २०७४, आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्धतिथि निर्णय, सन २०१७

पूर्णिमा (पूनम) का श्राद्ध (भाद्रपद शुक्लपक्ष)		मंगलवार	५ सितंबर	मध्यान्ह	१२।३८ बजे के बाद
प्रतिपदा (एकम)	”	बुधवार	६ सितंबर	मध्यान्ह	१२।३० बजे के बाद
द्वितीया (दूज)	”	गुरुवार	७ सितंबर	मध्यान्ह	११।५१ बजे के बाद
तृतीया (तीज)	”	शुक्रवार	८ सितंबर	दिन	१०।४५ बजे के बाद
चतुर्थी (चोथ)	”	शनिवार	९ सितंबर	प्रातः	९।१६ बजे के बाद
पंचमी (पांच)	”	रविवार	१० सितंबर	प्रातः	७।२८ बजे के बाद
षष्ठी (छठ)	”	सोमवार	११ सितंबर		
सप्तमी (सातं)	”	मंगलवार	१२ सितंबर		
अष्ठमी (आठं)	”	बुधवार	१३ सितंबर		
नवमी (नौमी)	”	गुरुवार	१४ सितंबर		
दशमी (दस)	”	शुक्रवार	१५ सितंबर		
एकादशी	”	शनिवार	१६ सितंबर		
द्वादशी (बारस)	”	रविवार	१७ सितंबर	मध्यान्ह	२।४३ बजे के पहले
त्रयोदशी (तेरस)	”	सोमवार	१८ सितंबर	मध्यान्ह	१।१० बजे के पहले
चतुर्दशी (चौदस)	”	सोमवार	१८ सितंबर	मध्यान्ह	१।१० बजे के बाद
अमावस्या (मावस)	”	मंगलवार	१९ सितंबर	मध्यान्ह	११।५५ बजे के बाद

॥ श्री महा-मृत्युञ्जय मंत्र ॥

॥ ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हों ॐ ॥

- यह षट् प्रणव युक्त (छ ॐकारवाला) मंत्र है ।

अर्थ - सुयश, आयु तथा पुष्टि की वृद्धि करने वाले हे त्र्यम्बक मृत्युञ्जय भगवान । आप संसार के बंधन एवं मृत्यु से मुक्ति दें किन्तु अपनी अमृतमयी कृपा से उसी प्रकार वञ्चित न करें जिस प्रकार खरबूजे का फल पक जाने पर अपने डंठल से अलग हो जाता है किन्तु रस-त्तव से नहीं ।

इस मंत्र का जप अनुष्ठान पूर्वक किसी विद्वान ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिये । बाधाओं को दूर करने के लिए यह अमोध मंत्र है ।

- श्री मार्कण्डेय पुराण

॥ श्री राणी सती जी की आरती ॥

जय राणि सती माता, जय राणि सती माता ।
कलियुग में अवतारी, जन जन सुख दाता, जय राणि सती ..

मांग सिन्दूर विराजत-टीको मन मोहे,
गल मोतियन की माला-नथ बेसर सोहे, जय राणि सती ..

लाल चुनरिया चमके-छवि लागे प्यारी...
चुडला दम दम दमके भक्तन हितकारी, जय राणि सती...

नारायणि, ब्रह्माणी-पार्वती, सीता,
राणी सती कोई कहता-तू भगवद्गीता, जय राणि सती...

तनधन पति कहाये-गुरसामल जाई,
सत की ज्योत अनूठी-सेवक सुखदाई, जय राणि सती...

झुंझुनू में है वास तिहारो-शोभा अति न्यारी,
धूप-दीप, तुलसी से-पुजे नर नारी, जय राणि सती...

भादो बदी अमावस-मेला खूब भरे,
दूर दूर के यात्री-तुमको नमन करे, जय राणि सती...

पुत्र, पौत्र, सुख, सम्पति-अन, धन की दाता,
रोग विनाश करे जो द्वार तेरे आता, जय राणि सती...

रण चण्डी का रूप तिहारा-ममता मई माता,
जिस पर कृपा तुम्हारी-सब वैभव पाता, जय राणि सती...

राणि सती जी की आरती-जो कोई नर गावे,
रमाकांत कहे निश्चय-वांछित फल पावे, जय राणि सती...

॥ श्री गणेश जी की आरती ॥

जै गणेश जै गणेश, जै गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी ।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डूअन का भोग लागे सन्त करें सेवा ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

अन्धन को आँख देते कोढिन को काया ।
बाँझन को पुत्र देते निर्धन को माया ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

दीनन की लाज राखो, शंभु पुत्र वारी ।
मनोरथ को पूरा करो, जाये बलिहारी ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

जय दादी की

॥ श्री कृष्णजी की आरती ॥

॥ आरती युगल किशोर की कीजै ॥

आरती युगल किशोर की कीजै । तन मन धन न्योछावर कीजै ॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा । ताहि निरख मेरो मन लोभा ॥
गौर श्याम-मुख निरखत रीझै । प्रभु को रूप नयन भर पीजै ॥
कंचन थार कपूर की बाती । हरि आए निर्मल भई छाती ॥
फूलन की सेज फूलन की माला । रत्न सिहांसन बैठे नन्दलाला ।
मोर मुकुट कर मुरली सोहे । कुंज बिहारी गिरिवर धारी ॥
श्री पुरूषोत्तम गिरिवर धारी । आरती करत सकल ब्रज नारी ॥
नंदनदन वृषभानु किशोरी । परमानन्द स्वामि अविचल जोरी ॥

॥ अम्बे तू है जगदम्बे ॥

अम्बे तू जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्परवाली ।
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ॥
तेरे जगत के भक्त जनन पर, भीड पडी है भारी ।
दानव दल पर टूट पडों माँ, करके सिंह सवारी ।
सौ- सौ सिंहो सी तू बलशाली, हे देश भुजाओं वाली-
दुष्टों को तू ही तो सँहारती - ओ मैया ... हम सब ० ॥
माँ बेटे का है इस जग में, बडा ही निर्मल नाता ।
पूत कपूत सुने है पर ना, माता सुनी कुमाता ।
सब पे अमृत बरसाने वाली, सबको हरपाने वाली -
नैया भँवर से उबारती - ओ मैया... हम सब ० ॥
नहीं मांगते धन और दौलत, ना चाँदी ना सोना ।
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना ।
सबपे करूणा बरसाने वाली, विपदा - मिटाने वाली-
सतियों के सत् को संवारती - ओ मैया... हम सब ० ॥

॥ आरती श्रीकृष्णजी की ॥

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, यशुमति के हितकारी ।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन-मदन मुरारी ॥१॥
कंसा सुर जाना अति भय माना, पुतना बेगि पठाइ ।
सो मन मुसुकाई हर्षित घाई, गई जहाँ यदुराई ॥२॥
तेहि जाई उठाई हृदय लगाई, पयोधर मुखमें दीन्हे ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई, प्राण तासु हरि लीन्हे ॥३॥
जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी ।
गौवन हितकारी मुनि मनहारी, नखपर गिरिवरधारी ॥४॥
कंसासुर मारे अति हैकारो, वत्सासुर सँहारे ।
बक्कासुर आयो बहुत डरायो, ताकर वदन विडारे ॥५॥
अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणि, ताहि दीन निज लोका ।
ब्रह्मासुर राई अति सुख पाई, मगन हुए गये शोका ॥६॥
यह छन्द अनुपा है रस रूपा, जो नर याको गावै ।
तेहि सम नहि कोई त्रिभुवन माही, मनवांछित फल पावै ॥७॥

दोहा - नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सौ मन लाय ।
तासों हरि तिन्ह सुख दियो, बाल - भाव दिखलाय ॥

श्रीकृष्ण - जन्मोत्सव गायन

नन्द - घर आनन्द भयो, जय कन्हैया-लालकी ।
हाथी दीन्हे घोडा दीन्हे, और दीन्ही पालकी । नन्द - घर . ॥१॥

रत्न दीन्हे, हार दीन्हे, गऊ व्याई हाल की ।
कंठा दीये कठुला दिये, दीन्हीं मुक्ता माल की । नन्द - घर . ॥२॥

कड़े दीये छडे दीये, बिन्दी दीन्हीं भाल की ।
सुरमा दीन्हों, दर्पण दीन्हों, दीन्हीं कंघी बालकी । नन्द - घर . ॥३॥

जय दादी की

॥ पित्तरदेव की स्तुति ॥

जय जय पित्तरजी महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी जय ।
जय जय पित्तराणि महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी जय ।
आप ही रक्षक, आपही दाता, आपही खेवनहारे ।
मै मुरख कुछ नहिं जानुं, आप ही हो रखवारे ॥१॥ जय०

आप खडे है हरदम हर घडी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन है शरण आपकी, है ये अरज गुजारी ॥२॥ जय०
देस और परदेस सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पडे पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ॥३॥ जय०

मै भी आयो शरण आपकी, आपने सहित परिवार ।
रक्षा करो आपही सबकी, रटूं मैं बार-बार ॥४॥ जय०

चौदस ने थारी रात जगाता मावस धोक लगातां ।
थारी सेवा करके देवा कुल रो मान बढाव वा ॥५॥ जय०

॥ जय दादी की ॥
॥ जय दादी की ॥

जय दादी की

आरती श्री रामायणजी की

आरती श्री रामायण जी की । कीरती कलित ललित सिय पी की ।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक बिग्यान बिसारद ।।
सुक सनकादिक सेष अरू सारद । बरनि पवन सुत कीरति नीकी ।।१।।
गावत वेद पुराण अष्ट दस । छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।।
मुनि जन घन संतन को सरबस । सार अंस संम्मत सबही की ।।२।।
गावत संतत संभु भवानी । अरू घटसंभव मुनि बिग्यानी ।।
व्यास अदि कविबर्ज बरबानी । कागभुसंडी गरूड के ही की ।।३।।
कलिमल हरनि विषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।।
दलन रोग भव मूरि अमि की । तात मात सब विधि तुलसी की ।।४।।

आरती श्रीरामजी की

जय जानकीनाथा प्रभु जय श्री रघुनाथा ।
दोऊ कर जोरे विनउ प्रभु सुनिये बाता ।।
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता ।
तुम ही सज्ञन संगी, भक्ति मुक्ति दाता ।।
लख्व चौरासी फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ।
निस दिन प्रभु मोहे रख्वियो अपने ही पासा ।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रूघन संग चारो भैया ।
जगमग ज्योत विराजत शोभा अति लहिया ।।
हनुमत नांद बजावत, नेवर झमकाता ।
स्वर्णथाल कर आरती, करत कौसल्या माता ।।
सुमग मुकुट सिर, घनु सर कर सोमा भारी ।
मनीराम दर्शन को, पल-पल बलहारी ।।

श्री रामावतार पाठ

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभासिंधु खरारी ।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरि केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना बेद पुराण भनंता ।।
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावंहि श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहे ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ।।

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणम् ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ।।
कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुतड़ित रुचिसुचि नौमिजनक सुतारवम् ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथ नन्दनम् ।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंगविभूषणम् ।
आजानुभुज सर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनम् ।
मम हृदय कंजनिवास कुरु कामादि खलदल गंजनम् ।।
मनजाहि रांच्यो मिलहि सोवर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ।।

एहिभांति गौरि अशीषसुनसियसहितहियहर्षित अली ।
तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि मुदित मनमंदिर चली ।।
जानि गौरि अनुकूल,सिय हिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ।।

आदौ रामतपो वनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम्
वैदेही हरणं जटायु मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम् ।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरी दाहनम्
पश्चाद् रावण-कुम्भकर्ण हननं, एतद्धि रामायणम् ।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय ।। पवनसुत हनुमान की जय ।।

।। बजरंगबली की आरती ।।

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर काँपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।।
अंजनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।।
लंकासी कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर सब मारे, रामचंद्रजी के काज संवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, लाय संजीवनी प्राण उबारे ।
पैठी पाताल तोरि यम कातर, अहि रावण की भुजा उखारे ।।
बाएँ भुजा सब असुर संहारे, दाहिनी भुजा सब सन्त उबारे ।
सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे, जैं जैं जै हनुमान उचारे ।।
कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अन्जनी माई ।।
जो हनुमान जी कि आरती गावै, बसि बैकुंठ अमरपद पावै ।
लंका विध्वंस किये रघु राई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ।।

श्री हनुमानजी के लिए नमन

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वा नरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय ।। पवनसुत हनुमान की जय ।।

॥ श्री सत्यनारायणजी की आरती ॥

ॐ जय लक्ष्मीरमणा - स्वामी श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी - सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥

रत्न जटित सिंहासन अद्‌भुत छवि राजै - स्वामी अद्‌भुत छवि राजै ।
नारद करत निरंतर - नारद करत निरंतर, घंटा ध्वनि बाजै ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ १॥

प्रकट भये कलिकारण द्विज को दरश दियो - स्वामी द्विज को दरश दियो
बूढो ब्राह्मण बनकर - बूढो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ २॥

दुर्बल भील कठारु जिन पर कृपा करी - स्वामी जिन पर कृपा करी
चन्द्र चूड़ एक राजा - चन्द्र चूड़ एक राजा,जिनकी विपत्ति हरी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ३॥

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी - स्वामी श्रद्धा तज दीनी
सो फलभोग्यो प्रभुजी - सो फल भोग्यो प्रभुजी,फिर अस्तुति कीनी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ४॥

भाव भक्ति के कारण छिन छिन रुप धरो - स्वामी पल पल रुप धरो
श्रद्धा धारण कीनि - श्रद्धा धारण कीनि, तिनको काज सरयो ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ५॥

ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी - स्वामी वन में भक्ति करी
मन वांच्छित फल दीन्यो - मन ईच्छा फल दीन्यो, दीन दयाल हरी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ६॥

चढत प्रसाद सवायो कदवी फल मेवा - स्वामी कदवी फल मेवा
धूप दीप तुलसी से - धूप दीप तुलसी से, राजी सत देवा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ७॥

श्री सत्यनारायण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे-स्वामी जो भक्ति से गावे
भणत शिवानन्द स्वामी - मनरटत भोलानन्दस्वामी, सुख्व संपत्ति पावे ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ८॥

ॐ जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥

बोलो श्री सत्यनारायण भगवान की जय । परमब्रह्म परमात्मा की जय ।
अटल छत्र की जय ।

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै र्पुन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ॥

स्तुतिः कस्तूरी तिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभं
नासाग्रेवरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ।
सर्वांगे हरिचंदन सुललितं कंठेचमुक्तावलिं
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं,
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरंसुंदरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं,
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥

सशंख्व चक्रं सकीरीटकुण्डलं स पीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
स हारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियम् नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं सुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैक नाथम् ॥

हे रामा पुरुषोत्तमा नर हरे नारायणकेशव
गोविन्द गरुड़ध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ।
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥

आदौ देवकी देवगर्भ जननंगोपीगृहे वर्धनम्
माया पूतनजीवताप हरणं गोवर्धनोदारणम् ।
कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुंन्ती सुतापालनम्
एतत् श्रीमद्भागवत् पुराण कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धाबुद्ध इति प्रमाण पटवः करतेति नैयाययिकाः ।
अर्हन्नित्यऽथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांच्छित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

बोलो श्री सत्यनारायण भगवान की जय । परमब्रह्म परमात्मा की जय । अटल छत्र की जय ॥

॥ श्री दुर्गाजी की आरती ॥

ॐ जय अंबे गौरी, मैया जय मंगलमूर्त्ती ।
थाँ को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृग मदको ।
उज्वल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥१॥
कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजे ।
रक्त पुष्प गलेमाला, कंठनपर साजे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥२॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुरनर मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारि ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥३॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत समज्योती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥४॥
शुम्भनिशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नयना, निशदिन मदमाती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥५॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥६॥
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥७॥
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुं ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरुं ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥८॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पती करता ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥९॥
भुजा चारि अति शोभित, खड्ग खप्र धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नरनारी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥१०॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥११॥
श्री अंबेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
भणत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ती पावे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥
ॐ जय अंबे गौरी, मैया जय मंगलमूर्त्ती,
मैया जय आनंद करणी, मैया जय संकट हरणी,
मैया जय रिद्ध सिद्ध करणी, मैया जय दुःखदारिद हरणी ।
थाँ को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै र्पुन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ॥

स्तुतिः शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमा माद्यां जगद् व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्पाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्देतां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता
या वीणावर दण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभितिभिर्देवैः सदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निशेष जाड्यापहाम् ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे श्रीशंकर प्राण बल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

बोलो श्री जगदम्बे मात की जय ! अन्नपूर्णे मात की जय !
सच्चे दरबार की जय ! अटल छत्र की जय ! भगवती मात की जय !

श्री कालीजी की स्तुति

मंगल की सेवा सुण मेरी देवा, हाथ जोड़ थारे द्वार खड़े
पान सुपारी ध्वजा नारियल-पान सुपारी ध्वजा खोपरा,
ले ज्वाला थारी भेंट धरे ।
सुण जगदम्बे न कर विलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे
चरन कमल का लिया आसरा - चरन कमल का लिया आसरा,
शरण तुम्हारी आनपरे ।
जब-जब भीर पड़े भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

बार बार ते सब जग मोह्यो, करुणी रूप अनूप धरे
माता होकर पुत्र खिलावै - माता होकर पुत्र खिलावै,
कहीं भार्या भोग करे ।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकारकरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश देव सब, भेंट लिए थारे द्वार खड़े
अटल सिंहासन बैठी मेरी माता - अटल सिंहासन बैठी मेरी माता,
सिर सोने का छत्र फिरे ।
वार शनिश्चर कुमकुमवरणी, जब लुंकड़ पर हुकम करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

खड्ग खप्पर त्रीशूल हाथ लिए, रक्तबीज को भस्म करे
शुम्भनिशुम्भ को क्षण ही में मारे - शुम्भनिशुम्भ को क्षण ही में मारे
महिषासुर को पकड़दले ।
आदितवार आदि की वीरा, जन अपने का कष्ट हरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे
जब तुम देखो दया रुप हो - जब तुम देखो दया रुप हो,
पल में संकट दूर टरे ।
सौम्य स्वभाव धरयो मेरीमाता, जिनकी अरज कबूलकरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

सात बार की महिमा बरणी, सब गुण कौन बखान करे
सिंह पीठ पर चढी भवानी - सिंह पीठ पर चढी भवानी,
अचल भवन में राज करे ।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक थारी भेंट धरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

ब्रह्मावेद पढ़े थारे द्वारे, शिव शंकर हरि ध्यान करे
इन्द्र कृष्ण थारी करे आरती - इन्द्र कृष्ण थारी करे आरती,
चवँरकुबेर डुलाय रहे ।
जय जननी जय मातभवानी, अचल भवन में राज करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

॥ श्री जगदम्बे मात की जय ॥ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

॥ आरती श्री शंकरजी की ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धाङ्गी धारा ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन, पञ्चानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते सोहै ।
तीनों रुप निरख्ता, त्रिभुवनजन मोहै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर,बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

करमध्ये च कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता, जगपालन कर्त्ता ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर दौ मध्ये, ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

काशी मे विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत, महिमा अतिभारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

त्रिगुणा स्वामी की आरती, जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानंद स्वामी, वांच्छितफल पावै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु भज शिव ओंकारा,
हो शिव गल में रुण्डमाला, हो शिव ओढत मृगछाला,
हो शिव पीते भंगप्याला, हो शिव रहते मतवाला,
हो शिव पार्वती प्यारा, हो शिव भूरी जटा वाला ॥
जटा में गंग विराजे, मस्तक में चंन्द्र विराजे, आसन कैलाशा ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

बोलो श्री शंकर भगवान की जय । बम् भोले नाथ की जय ।
उमा पति महादेव की जय ॥

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै र्पुन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ।।

भगवान शंकरजी की स्तुति

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नग भूषणम् मृगधरं वंदे पशूनांपतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांक वन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदम् वन्दे शिवं शंकरम् ।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयो प्रदक्षिणविधिः स्तोस्त्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदस्विलं शम्भो तवाराधनम् ।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।

शिव समान दाता नहीं और विपत विदारणहार ।
लज्ञा सबकी राख्वियो बाबा बैलन के असवार ।

बोलो श्री शंकर भगवान की जय ! बम् भोले नाथ की जय !
उमा पति महादेव की जय ! हर हर हर महादेव ।

विशेष फल के लिए- भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए वर्ष में एक बार लघुरुद्र अथवा महारुद्र से रुद्राभिषेक करायें ।

(१) लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए मात्र गन्ने के रस से अभिषेक करें ।
(२) पुत्र प्राप्ति के लिए ताजा कच्चे दूध से अभिषेक करें ।
(३) रोगों का नाश करने के लिए कुशा (डाब) के जल से अभिषेक करें ।
(४) पत्नी अथवा पति की प्राप्ति के लिए मिश्री के जल से अभिषेक करें ।
(५) घर में शांति के लिए जल से अभिषेक करें ।

भगवान शिव और शक्ति की आराधना सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करती है । माता-पिता, गुरू, देवता, ब्राह्मण, पति इनकी सेवा व सम्मान और परोपकार की भावना आत्मशांति प्रदान करते हैं जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है ।

॥ आरती श्री जगदीशजी की ॥

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मनका ।
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥२॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहुँ मैं किसकी ।
तुमबिन और न दूजा,आस करूँ मैं किसकी ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किसविधमिलहुँ दयामय, तुमसे मैं कुमति ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥६॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओं, द्वार खड़ा तेरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥७॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरों देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥८॥
तन मन धन जो है सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागै मेरा ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥९॥
ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

॥ आरती राणीसतीजी की ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि ॥

जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्ब सती ।
अपने भक्त जनों की दूर करें विपती ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
अवनी अनन्तर ज्योति अखण्डित मंडित चहुँकुकुम्भा ।
दुरजन दलन खड़ग की, विद्युतसम प्रतिभा ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे ।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग धुरे ।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरे ।
विविध प्रकार के व्यञ्जन, श्री फल भेंट धरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
संकट विकट विदारिणी, नाशनी हो कुमति ।
सेवकजनहृदि पटले, मृदुल करन सुमति ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
अमल कमल दल लोचनी, मोचनी त्रय तापा ।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
श्री राणीसती मैयाजी की आरती जो कोई नर गावे ।
सदन सिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥

॥ आरती श्रीलक्ष्मी जी की ॥

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरविष्णु धाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला, तू ही है जगमाता ।
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥१॥

दुर्गा रुप निरन्जनी, सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धिसिद्धि धनपाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥२॥

तू ही है पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव-प्रकाशिनि, जगनिधि से त्राता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥३॥

जिस घर थारो वासो, वाही में गुण आता ।
कर न सके सोई करले, मन नहीं धड़कता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥४॥

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय राता ।
स्वान पान को वैभव, तुम बिन कुण दाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥५॥

शुभ गुण सुन्दर युक्ता, क्षीर निधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तोकूँ, कोई भी नहीं पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥६॥

या आरती लक्ष्मीजी, की जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमंगे, पाप उतर जाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥७॥

स्थिर चर जगत बचावै, कर्म प्रेर ल्याता ।
राम प्रताप मैया की, शुभ दृष्टि चाहता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥८॥

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरविष्णु धाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

श्री महामृत्युञ्जय मन्त्र (पौराणिक)

मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतम् । जन्म मृत्यु जराव्याधि पीड़ितं कर्म बंधनैः ।
तावकस्त्वद्गतप्राण त्वक्चित्तोऽहं सदामृड । एवं विज्ञाप्य देवेशं भजेद्देवं तु त्रयंबकम् ।

ॐ भू र्भुवः स्वः श्री साम्ब सदा शिवायनमः

श्री शिवरामाष्टकम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविधतापनिवारण हे विभो ।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ १॥
कमलल्लोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते ।
शिवतनो भव शंकर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ २॥
स्वजनरंजन मंगलमंदिरं भजति तं पुरुषं परमं पदम् ।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ३॥
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जितपुण्यपयोनिधे ।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ४॥
भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते ।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ५॥
अवनिमण्डलमङ्गल मापते जलदसुंदर राम रमापते ।
निगमकीर्तिगुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ६॥
पतितपावननाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते ।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ७॥
अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नाम धनोपमम् ।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ८॥
हनुमतः प्रिय चापकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो ।
मम विभो किमुविस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ९॥
नरहरेति परं जनसुन्दरं पठति यः शिवरामकृतस्तवम् ।
विशति रामरमाचरणांबुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥१०॥
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः ।
विजयो जायते तस्य विष्णुसान्निध्यमाप्नुयात् ॥११॥

॥ इति श्रीरामानंदविरचितं शिवरामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसांबसदाशिवार्पणमस्तु ।

॥ आरती श्री श्यामबाबाजी की ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रुप धरे ॥ टेर ॥
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चवँर डुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण परे ॥ १ ॥
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ २ ॥
मोदक खीर चुरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ४ ॥
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरतीगावें, जय जय कार करे ॥ ५ ॥
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उभरे ।
सेवकजन निजमुख से, श्री श्याम श्याम उच्चरे ॥ ६ ॥
श्री श्याम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत आलुसिंह स्वामी, मनवांछितफल पावे ॥ ७ ॥
ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ॥ १ ॥

अथ महालक्ष्म्यष्टकम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ इन्द्र उवाच ॥

नमस्तेऽस्तुमहामाये श्रीपीठेसुरपूजिते । शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मिनमोऽस्तुते ॥ २॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वद्रुष्टभयंकरि । सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ३॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रमूर्ते सदा देविमहालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ते महेश्वरि । योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ५॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरि । महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोतिसर्वदा ॥ ९॥
एककाले पठेन्नित्यं माहापापविनाशनम् ॥ द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ॥ महालक्ष्मी भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

॥ इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीगणपति-अथर्वशीर्षम् ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्ति..

हरिः ॐ ॥ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ॥ त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्व खल्विदं ब्रह्मासि ॥ त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमवशिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवचोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोनलोनिलोनभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि । त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसिनित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् । गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेंदुलसितम् ॥१॥ तारेण रूद्धम । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिंदुरूत्तररूपम् । नादः संधानम् । संहिता संधिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः । श्रीमहागणपतिर्देवता ॥ ॐ गम् । (गणपतये नमः।) एकदंताय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि । तन्नो दंती प्रचोदयात् । एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमकुंशधारिणम् । अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लंबोदरंशूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पै सुपूजितम् ॥ भक्तानुकंपिनं देवं-जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भुतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽ स्तु लंबोदरायैकदंताय

विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥ एतदथर्वशिरो योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविध्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतंपापंनाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापंनाशयति । सायंप्रातः प्रयुंजानोऽपापो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति । इदमथर्वशीर्षम् शिष्याय न देयं । यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति ॥ सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत । अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति । स विद्यावान भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्या चरणंविद्यात् । न बिभेति कदाचनेति । योदूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति । स मेधावान्भवति । यो मोदकसहस्रेणयजति स वांछितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात् प्रमुच्यते । महापातात् प्रमुच्यते । महादोषात् प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ॥ ॐ भद्रंकर्णेभिरिति शान्तिः ॥

॥ इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसख्वः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूशानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरूणो धनमश्विना ॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तया श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसख्वीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥२७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ।।

।। इति ।।

॥ श्री राणी सतीजी चालीसा ॥

दोहा

श्रीगुरु पद पंकज नमन, दूषित भाव सुधार ।
राणीसती सुविमल यश, बरणौं मति अनुसार ॥
काम क्रोध मद लोभ में भरम रहा संसार ।
शरण गहि करूणा मई, सुख सम्पति संचार ॥

चौपाई

नमो नमो श्री सती भवानी । जग विख्यात सभी मनमानी ॥
नमो नमो संकट को हरनी । मनवाँछित पूरण सब करनी ॥
नमो नमो जय जय जगदम्बा । भक्तन काज न होय विलम्बा ॥
नमो नमो जय जय जगतारिणी । सेवक जन के काज सुधारिणी ॥
दिव्य रुप सिर चूनर सोहे । जगमगात कुण्डल मन मोहे ॥
मांग सिन्दूर सुकाजर टीको । गजमुक्ता नथ सुन्दर नीकी ॥
गल वैजयन्ती माल बिराजे । सोलहूँ साज बदन पे साजे ॥
धन्य भाग गुरसामल जी को । महम् डोकवा जन्म सती को ॥
तनधन दास पतिवर पाये । आनन्द मंगल होत सवाये ॥
जालीराम पुत्र वधु होके । वंस पवित्र किया कुल दोके ॥
पती देव रण मांय जुझारे । सती रूप हो शत्रु संहारे ॥
पति संग ले सद्गति पाई । सुर मन हर्ष सुमन बरसाई ॥
धन्य भाग उस राणाजी को । सुफल हुआ कर दरस सती को ॥
विक्रम तेरा सौ बावन कूं । मंगसिर वदि नौमी मंगल कूं ॥
नगर झुन्झुनू प्रगटी माता । जग विख्यात सुमंगल दाता ॥
दूर देश के यात्री आवें । धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें ॥
उछाड़ उछाड़ते हैं आनन्द से । पूजा तन मन धन श्रीफल से ॥
जात जडूला रात जगावे । जन जन दादी सभी मनावे ॥

पूजन पाठ पठन द्विज करते । वेद ध्वनी मुखसे उच्चरते ।।
नाना भाँति भाँति पकवाना । प्रियजनों को नित्य जिमावा ।।
श्रद्धा भक्ति सहित हरसाते । सेवक मनवाँछित फल पावे ।।
जय-जयकार करे नर नारी । श्री राणीसती की बलिहारी ।।
सिंल द्वारा नित नौबत बाजै । होत सिंगार सात अति साजे ।।
रत्न सिंहासन झलके नीको । पल-पल छिन छिन ध्यान सती को ।।
भाद्र कृष्ण मावस दिन लीला । बरता मेला रंग रंगीला ।।
भक्त सुजन की सकड़ भीड़ है । दरसन के हित नहीं छीड़ है ।।
अटल भुवन में ज्योति तिहारी । तेज पुंज जग मां उजियारी ।।
आदि शक्ति में मिली ज्योत है । देश देश में भवन भौति है ।
नाना विधि सों पूजा करते । निशदिन ध्यान तिहारो धरते ।।
कष्ट निवारणी दुःख नासिनी । करुणामयी झुन्झुनू वासिनी ।।
प्रथम सती नारायणी नामां । द्वादस और हुई इसी धामा ।।
तिहूँ लोक में कीरति छाई । श्री राणी सती फिरी दुहाई ।।
सुबह शाम आरती उतारे । नोबत घन्टा ध्वनि टंकारे ।।
राग छतीसों बाजा बाजें । तेरह मंढ़ सुन्दर अति साजें ।।
त्राहि - त्राहि मैं शरण आपकी । पूरो मन की आस दास की ।।
मुझको एक भरोसो थारो । आन सुधारो कारज मेरो ।।
पूजन जप तप नेम न जानूं । निर्मल महिमा नित्य बखानूं ।।
भक्तन की आपति हर लेनी । पुत्र पौत्र सम्पति वर देनी ।।
पढे चालीसा जो सत बारा । होय सिद्ध मन मांहि बिचारा ।।
गोपीराम शरण ली थारी । क्षमा करो सब चूक हमारी ।।

।। दोहा ।।

दुख आपद विपता हरण, जग जीवन आधार ।
बिगरी बात सुधारिये, सब अपराध बिसारि ।।

॥ पुष्पांजली ॥

चन्द्र तपै सूरज तपै, उदगन तपै आकाश ।
इन सबसे बढ़ कर तपै, सतियों का सुप्रकाश ॥
सेवा पूजा बन्दगी, सभी तुम्हारे हाथ ।
मै तो कुछ जानू नही तुम जानो मेरी मात ॥
जय जय श्री राणी सती, सत्य पुँज आधार ।
चरण कमल धरि ध्यान में, प्रणवहुं बारम्बार ॥
मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय ।
तेरा तुझको सौंप दूँ, क्या लागत है मोय ॥
मैया सब कुछ माँगल्यो, जो कुछ मेरे पास ।
दो नैना मत माँगियो, माँ थारे दरश की आश ॥
जगदम्बा जगतारिणी, राणी सती मेरी मात ।
भूल चूक सब माफ कर, शिर पर रखियो हाथ ॥
बैल चढ़े शंकर मिले, गरुड़ चढ़े भगवान ।
सिंह चढी दादी मिली, हो सबका कल्याण ॥
सुमन सुगन्धित सुमन ले सुमन सुबुद्धि सुधार ।
पुष्पाञ्जली अर्पित करुँ हे मात करो स्वीकार ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
यानि कानि च पापानी, जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे पदे ॥
थार पसर पसर स्वांवा धोक, दादी म्हारी झुंझनू की ।
झुंझनू की ऐ माँ झुंझनू की, दादी म्हारी झुंझनू की ॥

॥ जय दादी की ॥